भगवान महावीर फाउंडेशन

आज़ादी का अमृत महोत्सव

25 वां
महावीर पुरस्कार

नवकार मंत्र

नमो अरिहंताणम
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणम
नमो लोए सव्व साहूणम
एसो पंच णमोक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणम च सव्वेसिं
पढ़मं हवई मंगल

जीवन में क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष रूपी शत्रुओं का नाश करने वाले अरिहंत को मेरा प्रणाम।
उन सभी सिद्ध भगवान को मेरा प्रणाम, जिन्होंने मोक्ष अथार्त सिद्धि की प्राप्ति की।
उन आचार्य भगवंतों को मेरा प्रणाम, जो मानव कल्याण के लिए पथ प्रदर्शक बने।
मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करने वाले उपाध्यायों को मेरा प्रणााम।
साधु–साध्वियों को नमन, जो ज्ञान से जगत में उजियारा फैला रहे हैं।
ये पांच नमस्कार मंत्र सभी शुभ मंत्रों में उत्तम है, इसका जाप करने से जीवन में सौगाभ्य की प्राप्ति हो।

पंजीकृत कार्यालय का पता

सियात हाउस,
961 पूनमल्ली हाई रोड, पुरसवलकम, चेन्नई, तमिलनाडु - 600084
फोन : 044 42153056 ; 044 35220000
ईमेल : bmfawards@gmail.com वेबसाइट : www.bmfawards.org

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
संस्थापक की कलाम से	1
25 वें महावीर पुरस्कार प्रस्तुति समारोह के मुख्य अतिथि	2
भगवान महावीर फाउंडेशन के बारे में	
• प्रोफ़ाइल	3
• ट्रस्टी	4
• पुरस्कार	5
महावीर पुरस्कार	
• पुरस्कारों का दायरा	6
• पुरस्कार चयन प्रक्रिया	7
• भगवान महावीर फाउंडेशन के महानवपूर्ण कदम	8
• शॉर्टलिस्टिंग समिति के सदस्य	9
• चयन जूरी के सदस्य	10
• पिछले समारोहों के मुख्य अतिथि	11
• 25 वें महावीर पुरस्कार विजेता	13
• राज्यवार और श्रेणीवार महावीर पुरस्कार का वितरण	18
• सभी पुरस्कार विजेताओं की सूची	19
महावीर निबंध पुरस्कार	21
सियात के सिंघवी	
• इतिहास	22
• श्री एन.सुगालचंद जैन	23
• सिंघवी की ६ पीढ़ियां	25
• सुगाल ग्रुप	26
• परोपकार के भाव से ओत प्रोत परिवार	27
धर्मार्थ संस्थाओं की स्थापना	
सिंघवी चैरिटेबल ट्रस्ट	31
• गतिविधियां	
• महावीर आश्रय	
• जिनेंद्र जीवदया केंद्र	
• महावीर राजस्थानी इंटरनेशनल स्कूल	
विद्या ज्योति ट्रस्ट	34
• एस.जे.एन.एस जैन ग्रुप ऑफ स्कूल्स	
• महावीर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस	
• एम.आई.टी.एस विज्ञान, कला और वाणिज्य महाविद्यालय	
• श्रीमती चन्द्राबाई कंप्यूटर साक्षरता कार्यक्रम	
• स्कूल दत्तक ग्रहण कार्यक्रम	
जैन्स इंडिया ट्रस्ट	36
एम्पथी फाउंडेशन	36
गणाधिपति तुलसी जैन इंजीनियरिंग कॉलेज, वेल्लूर	37
सुगल ग्रुप की सी.एस.आर गतिविधियों का सारांश	38
प्रेरणास्रोत	39

संस्थापक की कलम से

रजत जयंती वर्ष पर कण-कण करता गर्व। समाज के कर्मवीरों के पूजन का नव पर्व।

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है कि मानवता व जीव सेवा के लिए समर्पित भगवान महावीर फाउंडेशन, चेन्नई इस वर्ष अपना रजत जयंती समारोह मनाने जा रहा है। भगवान महावीर फाउंडेशन ढाई दशक से भी अधिक समय से देश के उन कर्मवीर व्यक्तियों और संस्थाओं को पुरस्कार से सम्मानित करने की मुहिम छेड़े हुए हैं, जो अपने इर्द-गिर्द समाज में पीड़ित मानवता का दर्द कम कर उनके चेहरों पर मुस्कान लौटा रहे हैं तथा जीवों के प्रति दया का भाव रखते हुए उन्हें जीवनदान देने हेतु सतत प्रयासरत हैं। फाउंडेशन समाज के ऐसे सजग प्रहरियों के मजबूत इरादों को नमन करते हुए सन् 1995 से अब तक देश के 84 कर्मवीर व्यक्तियों और संस्थानों को महावीर पुरस्कार के गौरव से अलंकृत किया जा चूका है। यह सभी सम्मानित कर्मवीर देश के 22 अलग-अलग राज्यों और 1 केन्द्रशासित प्रदेश में पीड़ित मानवता एवं मूक मवेशियों की सेवा में समर्पित हैं।

हमारी प्रसन्नता ओर अधिक इसलिए भी बढ़ जाती है कि जब हम अपने इर्द-गिर्द समाज में ऐसे व्यक्तियों और समाजसेवी संस्थानों को देखते हैं, जो समाजहितैषी गतिविधियों के जरिए कमजोर और वंचित लोगों की पीड़ा को समझते हुए उनके जीवन स्तर में सुधार लाने के प्रयासों में जुटे हुए है एवं कई कर्मवीर मूक मवेशियों की सेवा में प्रयासरत है। ऐसे कर्मवीरों का हौसला बढ़ाने तथा समाज के अन्य लोगों को भी इनसे प्रेरित करने की इच्छा से भगवान महावीर फाउंडेशन 4 अलग-अलग श्रेणियों यथा अहिंसा और शाकाहार, शिक्षा, चिकित्सा, सामुदायिक और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में किए जा रहे निःस्वार्थ सेवा कार्यों को महावीर सम्मान पुरस्कार से अलंकृत करता है।

महावीर सम्मान देश का वार्षिक पुरस्कार है, जिसमें विजेताओं की चयन प्रक्रिया पूर्णतया निष्पक्ष एवं पारदर्शी है। पुरस्कार देने का मकसद सिर्फ पुरस्कार विजेता का सम्मान करने तक ही सीमित नहीं है, वरन समाज के अन्य लोगों को भी प्रेरित कर उन्हें समाज की सेवा की दिशा में कदम बढ़ाने की ओर प्रोत्साहित करना है। इसी सुखद मंशा से फाउंडेशन प्रतिवर्ष एक समारोह आयोजित करता है, जिसमें देश की प्रतिष्ठित एवं गणमान्य व्यक्तियों द्वारा यथा भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, केन्द्र एवं राज्य सरकार के मंत्रियों के मुख्य आतिथ्य में महावीर सम्मान से सम्मानित कर विजेताओं को गौरव का एहसास कराया जाता है।

इसके साथ भगवान महावीर फाउंडेशन प्रतिवर्ष स्कूल और कॉलेज स्तर पर वार्षिक निबंध प्रतियोगिता के आयोजन करवा रहा है। अब तक इस प्रतियोगिता में लाखों युवाओं ने प्रतिभागियों के रूप में भाग लिया है| भगवान महावीर फाउंडेशन के संस्थापक के रूप में मेरा मानना है कि प्रकृति और समाज ने हमें बहुत कुछ दिया है, ऐसे में एक अच्छे सामाजिक नागरिक के रूप में हमारा यह कर्तव्य और दायित्व बनता है कि हम इस समाज के लिए कृतज्ञ भाव से ऐसे कर्म करें, जिससे मानव जीवन का ऋण अदा किया जा सके। भगवान महावीर फाउंडेशन ने समाज के प्रति कृतज्ञता जताने के लिए पुरस्कार देने की एक छोटी परन्तु परिवर्तनकारी पहल प्रारम्भ कर बेहतर समाज के निर्माण का सपना बुना है। सन् 1995 में जब इस मुहिम का श्रीगणेश किया, तब से निरंतर समाज सेवा के क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों एवं समाजसेवी संस्थाओं को सम्मानित किया जा रहा है।

चार अलग-अलग कार्यक्षेत्रों में दिए जाने वाले महावीर पुरस्कार को प्राप्त करने के लिए प्रतिवर्ष देशभर से हजारों की संख्या में नामांकन प्राप्त होते हैं। इस मुहिम की मजबूत आधारशिला के रूप में सेवारत शिक्षाविद, उच्च पदस्थ अधिकारी, निर्णायक समिति और कार्मिकों की एक सशक्त व मजबूत टीम पूर्ण रूप से निष्कर्ष निकालकर सर्वश्रेष्ठ सेवाकर्मी को गौरवशाली महावीर सम्मान से अलंकृत करने का मार्गप्रशस्त करती है। यह बताने के लिए पर्याप्त है कि हमारे देश में पीड़ित मानवता तथा बेसहारा मवेशियों की सेवा में जुटे कर्मवीरों का कारवां भी बढ़ता जा रहा है।

मेरी आपसे एक अपील है ..., यदि आप की नजर में कोई ऐसा व्यक्ति या संस्था है, जिसे आप महावीर पुरस्कार के योग्य मानते हैं, तो आप बेझिझक और निःसंकोच होकर उनकी जानकारी हमारे पास भिजवाएं। परमार्थ के भाव से कार्यरत ऐसे व्यक्तियों और संस्थाओं को सम्मानित करने में हमें प्रसन्नता की अनुभूति होगी। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हमारे समाज के कर्मवीरों को सम्मानित करने की इस यात्रा में आप अवश्य हमारे सहभागी बनेंगे।

एन. सुगालचंद जैन

मुख्य अतिथि

25वें महावीर पुरस्कार समारोह के मुख्य अतिथि
समारोह दिनांक 03 सितम्बर 2022

श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल महोदय, राजस्थान

भगवान महावीर फाउंडेशन

सेवा के इस सफर पर संक्षेप में एक नजर...

24वें जैन तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामी ने इस संसार को जियो और जीने दो का महत्व बताते हुए एक ऐसा मार्ग प्रदान किया जिस पर चलते हुए संसार के सभी जीव इस पावन धरा पर प्रेमपूर्वक व मित्रतावत अपने जीवन का निर्वाह कर सकें| भगवान महावीर फाउंडेशन प्रभु श्री महावीर स्वामी के सिद्धांतों और आदर्शों से ही सद्प्रेरित है। श्री एन. सुगालचंद जैन वैचारिक एकरूपता वाले अपने मित्रों से मिले और मन में उत्पन्न हुए विचारों को प्रकट किया। श्री जैन के विचारों से उनके मित्र भी प्रभावित हुए। समाज के लिए कुछ बेहतर करने की सोच से मनन और चिंतन करने के बाद एन. सुगालचंद जैन और उनके मित्रों ने यह तय किया कि देश के ऐसे संस्थानों और व्यक्तियों को सम्मानित किया जाए, जो सकारात्मक प्रयासों से समाज में आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े व्यक्तियों के जीवन स्तर में बदलाव ला रहे हैं।

बस, फिर क्या था, श्री एन. सुगालचंद जैन ने उसी समय एक संगठन की आधारशिला रखने की ठान ली, ताकि समाज के सच्चे कर्मवीर व्यक्तियों और संस्थाओं के सेवा कार्यों को नमन करने और समाज के प्रति कृतज्ञ होने के लिए पुरस्कार समारोह आयोजित किया जा सके। श्री जैन का मानना हैं कि परोपकारी सेवाओं के लिए औपचारिक समारोह में सम्मान किये जाने से अन्य व्यक्ति और संस्थाएं भी निश्चित रूप से प्रेरित होते हैं। इसी नेक इरादे और बदलाव की सोच से 1994 में श्री एन. सुगालचंद जैन ने चेन्नई में भगवान महावीर फाउंडेशन की स्थापना की। फाउंडेशन इस वर्ष रजत जयंती महोत्सव के खुशनुमा पलों को अनुभूत कर रहा है।

भगवान महावीर फाउंडेशन पुरस्कारों की चयन प्रक्रिया पूर्णतया निष्पक्ष व पारदर्शी है। विजेताओं के चयन के लिए गठित समिति में देश के विद्वान, उच्च शिक्षित और देश के प्रतिभाशाली व्यक्तित्व शामिल है। चयन समिति अध्यक्ष की अध्यक्षता में ही समिति देश के कोने-कोने में सेवा में जुटे योग्य व्यक्तियों और संस्थाओं की तलाश और पहचान करती है और इनमें से सर्वश्रेष्ठ का चयन करती है। वर्तमान में महावीर पुरस्कारों की चयन समिति के अध्यक्ष भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश पद्म विभूषण न्यायमूर्ति श्री एम.एन. वेंकटचलैया हैं। इससे पहले वर्ष 2000 तक ये महत्वपूर्ण जिम्मेदारी पूर्व केंद्रीय मंत्री, महाराष्ट्र के राज्यपाल और भारतीय विद्या भवन के अध्यक्ष सरीखे उच्च पदों को गौरवान्वित कर चुके भारत रत्न श्री सी. सुब्रमण्यम संभाल रहे थे।

पूर्व केंद्रीय मंत्री और महाराष्ट्र के महामहिम राज्यपाल भारत रत्न श्री सी. सुब्रमण्यम के साथ
श्री एन.सुगालचंद जैन और श्री जी. एन. दमानी।

ट्रस्टी

श्री एन. सुगालचंद जैन
संस्थापक ट्रस्टी

श्री प्रसनचंद जैन
प्रबंध ट्रस्टी

श्री प्रवीण बी छेड़ा
ट्रस्टी

श्री विनोद कुमार जैन
ट्रस्टी

श्री प्रमोद जैन
ट्रस्टी

श्री प्रतीक जैन
ट्रस्टी

श्री के. नंदकिशोर
आईएएस (सेवानिवृत)
सलाहकार

पुरस्कार की श्रंखला

देश के गांव, कस्बों और शहरों में सामाजिक और सामुदायिक सेवाभाव से ओतप्रोत परमार्थ के कार्यों को प्रोत्साहन देने की उद्देश्य से भगवान महावीर फाउंडेशन पिछले कई वर्षों से योग्य व्यक्तियों और संस्थाओं को पुरस्कार देता आ रहा है, जो निम्न है

1. महावीर पुरस्कार : 1995 से
2. निबंधों के लिए महावीर पुरस्कार : 2016 से

महावीर पुरस्कार सम्मान :

देश के प्रतिष्ठित पुरस्कारों में शामिल महावीर पुरस्कार सम्मान वर्ष में एक बार प्रदान किया जाता है। कमजोर तबकों और मूक प्राणियों की निःस्वार्थ सेवा की दिशा में व्यक्तिगत और संस्थागत स्तर पर किए जा रहे सर्वश्रेष्ठ मानव प्रयासों हेतु यह पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। भगवान महावीर फाउंडेशन द्वारा प्रत्येक श्रेणी में विजेता व्यक्ति अथवा संस्था को 10 लाख रूपए की पुरस्कार राशि के साथ स्मृति चिन्ह व प्रमाण पत्र से अलंकृत किया जाता है। महावीर पुरस्कार निम्नलिखित चार श्रेणियों में प्रदान किया जाता है-

- अहिंसा और शाकाहार
- शिक्षा
- चिकित्सा
- समुदाय और सामाजिक सेवा

भगवान महावीर फाउंडेशन ने प्रारंभिक दौर में सामाजिक और सामुदायिक क्षेत्र में निःस्वार्थ भाव से किए जा रहे सेवा कार्यों को सम्मानित करके महावीर पुरस्कार की शुरूआत की गई थी। तब यह पुरस्कार 1 श्रेणी में व राशि 5 लाख रूपए थी, जो वर्तमान में 10 लाख रूपए कर दी गई है। वक्त के गतिमान पहिए के साथ पुरस्कारों की संख्या भी 1 से बढ़कर 4 तक पहुँच चुकी है, तो पुरस्कार के रूप में राशि भी अब 40 लाख रूपए दी जा रही है।

1995 से लेकर अब तक के इस सफर में वंचितों और मूक प्राणियों के कल्याण के लिए निःस्वार्थ भाव से जुटे देश के 22 अलग-अलग राज्यों और 1 केंद्र शासित प्रदेश के 84 योग्य व्यक्तियों और संस्थाओं को पुरस्कार से अलंकृत किया जा चुका है। विजेताओं को फाउंडेशन की ओर से अब तक पुरस्कार राशि के रूप में 6,65,00,000 रूपए प्रदान किए गए हैं। फाउंडेशन की ओर से आयोजित पुरस्कार समारोहों में भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमंत्री और मंत्रियों सरीखे देश की प्रतिष्ठित हस्तियों ने मेजबानी कर पुरस्कार का गौरव बढ़ाया है। इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए प्रतिवर्ष देशभर से हजारों प्रस्ताव प्राप्त होते हैं, जिन्हें शॉर्टलिस्टिंग कमेटी के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। शॉर्ट लिस्टिंग कमेटी इनमें से योग्य नामों की सूची तैयार कर चयन समिति के समक्ष प्रस्तुत करती है। अंतिम निर्णय चयन समिति का होता है, जो इनमें से सर्वश्रेष्ठ का चयन महावीर पुरस्कार के लिए करती है।

महावीर पुरस्कारों का दायरा

पुरस्कार की श्रेणी	पुरस्कार का दायरा
अहिंसा और शाकाहार	- अहिंसा और शाकाहार का प्रयास - मूक पषुओं और पक्षियों की सुरक्षा और देखभाल - परमार्थ की सेवा में निःस्वार्थता और करुणा की भावना - ऐसा विशिष्ट उदाहरण, जहां अहिंसात्मक तरीके से विवाद का निस्तारण कर शांति की स्थापना की
शिक्षा	- शिक्षण पद्धति में सुधार के प्रयास और शिक्षा में नवाचार - ग्रामीण लोगों तक साक्षरता की अलख -ग्रामीण विद्यालयों में अनामांकित और वंचित बच्चों को शिक्षा से जोड़ने तथा पढ़ाई छोड़ चुके बच्चों का फिर से नामांकन करवाना - व्यावसायिक प्रशिक्षण या शिक्षा की वैकल्पिक प्रणाली का प्रयोग। निषक्त बच्चों के लिए शिक्षा और तकनीक का नवाचार -मानसिक और शारीरिक रूप से असक्षम व दिव्यांग और अपपठन की बीमारी से ग्रसित बच्चों को शिक्षा और पुनर्वास -विज्ञान और तकनीक के नवाचार से ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्र के लोगों की आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों में सुधार की कवायद - शिक्षण में सुधार के प्रयास
चिकित्सा	- समाज के वंचित और पीड़ितों की देखभाल, करुणा भाव के साथ गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने का प्रयास - समाज को जागरूक कर बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता - बेहतर स्वास्थ्य, स्वच्छ वातावरण और माहौल प्रदान करना - महिलाओं और बच्चों के लिए निषुल्क या कम लागत वाली चिकित्सकीय सुविधा मुहैया कराना, महिलाओं की प्रसव पूर्व और प्रसव के उपरांत देखभाल, बेहतर स्वास्थ्य और स्वच्छता तथा बच्चों के बेहतर पोषण के प्रयास - समाज के गरीब तबके के लोगों और वंचितों के कल्याण के लिए चिकित्सा संस्थानों की स्थापना के लिए महत्वपूर्ण प्रयास - गुणवत्तापूर्ण तथा उचित लागत पर चिकित्सकीय सुविधा प्रदान करने की मुहिम
सामुदायिक और सामाजिक सेवा	- शुद्ध पेयजल की आपूर्ति, स्वच्छता के लिए नवाचार और सुधार तथा कम लागत में संतुलित आहार। - गांवों की सड़कों, परिवहन व्यवस्था और संचार प्रणालियों में सुधार - शारीरिक व मानसिक रूप कमजोर बच्चों का पुनर्वास - पीड़ित महिलाओं को निषुल्क या कम लागत में कानूनी सहायता दिलाना, सामान्य कानूनी जागरूकता पैदा करना तथा सामाजिक स्थिति में बदलाव के लिए सुधारात्मक प्रयास - महिलाओं और कमजोर तबके के आर्थिक विकास के लिए विकासात्मक गतिविधियां - प्रौढ़ शिक्षा के प्रसार के साथ जागरूकता का प्रसार - दलित और आदिवासी कल्याण - कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्तियों, शारीरिक और मानसिक रूप से विमंदित बच्चों तथा बेसहारा लोगों का पुनर्वास - लोगों में स्वयं की सहायता और आत्मनिर्भरता के लिए आत्मविष्वास जगाकर प्रेरित करना - जीवन स्तर में सुधार के लिए कौषल विकास प्रशिक्षण षिविरों का आयोजन - खेतों के लिए लघु सिंचाई और सामुदायिक स्तर पर पेयजल स्रोत के लिए तालाबों सरीखी पेयजल संचयन संरचनाओं की स्थापना।

पुरस्कार चयन प्रक्रिया

प्रथम चरण

महावीर पुरस्कार के लिए भगवान महावीर फाउंडेशन की ओर से देश के अलग-अलग क्षेत्रों में सामुदायिक क्षेत्र व मूक प्राणियों की सेवा में निस्वार्थ भाव से जुटे योग्य व्यक्तियों व संस्थाओं के लिए एक निश्चित प्रारूप में प्रस्ताव आमंत्रित किये जाते हैं। इसके लिए अलग-अलग राज्यों के जिला प्रशासन के साथ ही सांसदों, विधायकों, शिक्षाविदों, पत्रकारों, समाजसेवियों और समाज के प्रतिष्ठित लोगों की मदद ली जाती है।

द्वितीय चरण

फाउंडेशन को मिलने वाले नामांकनों के प्रस्तावों को शॉर्ट लिस्टिंग समिति के समक्ष भिजवाया जाता है, जहां समिति इनमें से योग्य व्यक्तियों व संस्थाओं को चुनकर उनकी सूची तैयार करती है।

तृतीय चरण

संभावित सूची में नामांकित व्यक्तियों व संस्थाओं के सेवा कार्यों की वास्तविकता जांचने, इससे सामुदायिक स्तर पर होने वाले सकारात्मक प्रभावों की जांच करने तथा संस्थाओं के कार्यस्थलों का निरीक्षण करने एक टीम पहुँचती है। टीम उस व्यक्ति व संस्था के सेवा प्रकल्पों के साथ ही उनकी सेवा से लाभान्वित होने वाले व्यक्तियों व समुदायों से भी जानकारी व साक्ष्य जुटाती है।

चतुर्थ चरण

पुरस्कार के लिए चयनित नामांकित व्यक्तियों और संस्थाओं की सूची और इनके सेवा प्रकल्पों को जानने के लिए की गई यात्रा की रिपोर्ट भारत के पूर्व **मुख्य न्यायाधीश श्री एम.एन. वेंकटचलैया** की अध्यक्षता वाली महावीर पुरस्कार चयन समिति के समक्ष प्रस्तुत की जाती हैं | यह चयन समिति ही अंतिम रूप से सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों और सेवा संस्थानों का चयन कर अलग-अलग श्रेणियों में पुरस्कार विजेताओं के नाम की घोषणा करती है।

पंचम चरण

पांचवें और अंतिम चरण में अलग-अलग श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के लिए एक भव्य समारोह आयोजित किया जाता है। समारोह में देश के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्रीगण आदि विशिष्ट हस्तियों के आतिथ्य में विजेता प्रतिभाओं को नकद राशि व स्मृति चिन्ह से अलंकृत किया जाता है।

भगवान महावीर फाउंडेशन के महत्वपूर्ण कदम

1994
भगवान महावीर फाउंडेशन
की स्थापना

1995
प्रथम महावीर पुरस्कार
श्रेणी :
1. समुदाय और सामाजिक सेवा
पुरस्कार राशि: 5 लाख रूपए

1996
द्वितीय महावीर पुरस्कार
श्रेणी :
1. अहिंसा और शाकाहार
2. समुदाय और सामाजिक सेवा
पुरस्कार राशि : 5 लाख रूपए प्रत्येक श्रेणी में

1998
चतुर्थ महावीर पुरस्कार
श्रेणी :
1. अहिंसा और शाकाहार
2. शिक्षा और चिकित्सा
3. समुदाय और सामाजिक सेवा
पुरस्कार राशि: 5 लाख रूपए प्रत्येक श्रेणी में

2011
14वां महावीर पुरस्कार
श्रेणी :
1. अहिंसा और शाकाहार
2. शिक्षा
3. चिकित्सा
4. समुदाय और सामाजिक सेवा
पुरस्कार राशि: 10 लाख रूपए प्रत्येक श्रेणी में

2016
विद्यालय व महाविद्यालय स्तर पर निबंध
प्रतियोगिता के लिए महावीर पुरस्कार
रूपी सौगात की पहल

2018
सफल सामाजिक महिला उद्यमिता के क्षेत्र में
10 लाख रूपए का पुरस्कार प्रदान किया गया

2022
महावीर पुरस्कार का रजत जयंती महोत्सव

शॉर्ट लिस्टिंग समिति के सदस्य

श्री चिन्नी कृष्णा,
सह-संस्थापक एवं अध्यक्ष,
ब्लू क्रॉस ऑफ इंडिया तथा एमेरिट्स अध्यक्ष,
फेडरेशन ऑफ इंडियन एनिमल प्रोटेक्शन ऑर्गेनाएशन

श्री कैलाशमल दुगड़,
पूर्व अध्यक्ष,
राजस्थानी एसोसिएशन,
तमिलनाडु

श्री नरेश गुप्ता,
आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त),
पूर्व मुख्य चुनाव अधिकारी,
तमिलनाडु

श्री डी.के. ओझा,
आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त),
पूर्व कुलपति,
गांधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय,
तमिलनाडु

श्री पी.शंकर,
आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त),
पूर्व मुख्य सतर्कता आयुक्त

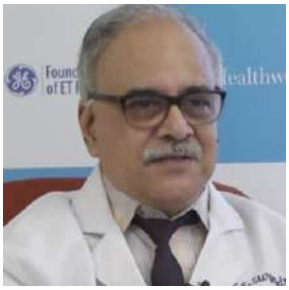

डॉ. टी.एस. सुरेंद्रन,
निदेशक, बाल रोग नेत्र विषेषज्ञ,
शंकर नेत्रालय (चिकित्सालय),
चेन्नई

25वें महावीर पुरस्कार के लिए प्रत्याशियों को शॉर्टलिस्ट करने के लिए शॉर्टलिस्टिंग कमेटी की बैठक

चयन समिति के सदस्य

न्यायमूर्ति
श्री एम.एन.वेंकटचलैया,
भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश,
चयन समिति अध्यक्ष

पूज्य आचार्य
श्री चन्दनाजी महाराज,
विद्वान व प्रख्यात संन्यासीनी
एवं समाज सुधारक

श्री एस.गुरुमूर्ति,
संपादक - तुगलक,
आर.बी.आई. के अंशकालिक निदेशक

श्री प्रो. बी. एम. हेगड़े,
अध्यक्ष भारतीय विद्या भवन,
मैंगलोर केंद्र

श्री टी.एस. कृष्णमूर्ति,
भारत के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त

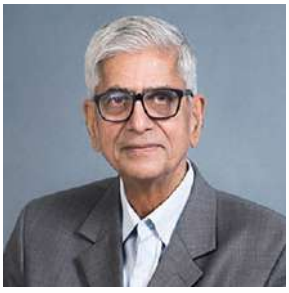

श्री डी.आर. मेहता,
आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त),
पूर्व अध्यक्ष,
भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड

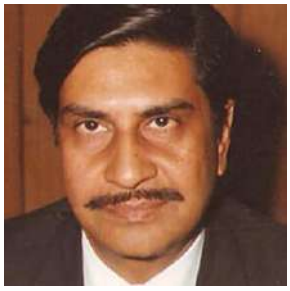

श्री प्रभात कुमार,
आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त),
पूर्व केबिनेट सचिव,
भारत सरकार

श्री जी.एस. सिंघवी,
भारत के सर्वोच्च
न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश

श्री प्रो. एम.एस.स्वामीनाथन,
मानद अध्यक्ष,
एम.एस.स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन,
चेन्नई

महावीर पुरस्कार समारोह के मुख्य अतिथि

2022- 25 वां महावीर पुरस्कार
महामहिम **श्री कलराज मिश्र**
माननीय राज्यपाल,
राजस्थान

2022 - 24 वां पुरस्कार
श्री ओम बिड़ला,
माननीय लोकसभा अध्यक्ष,

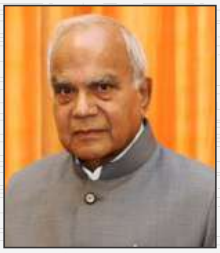

2021- 22वां और 23वां पुरस्कार
महामहिम, **श्री बनवारीलाल पुरोहित,**
राज्यपाल,
तमिलनाडु

2018 - 21वां पुरस्कार
महामहिम **श्री एम. वेंकैया नायडू,**
उपराष्ट्रपति,
भारत

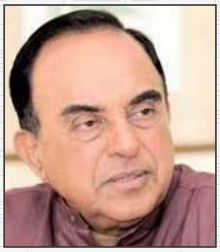

2017 - 20वां पुरस्कार
श्री डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी,
माननीय राज्य सभा सदस्य

2016 - 19वां पुरस्कार
श्री.एस. गुरुमूर्ति
संपादक तुगलक,
अंशकालिक निदेशक, आर.बी.आई

2015- 18वां पुरस्कार
श्री थावरचंद गहलोत,
माननीय केंद्रीय सामाजिक न्याय
एवं अधिकारिता मंत्री

2015 - 17वां पुरस्कार
डॉ. बद्रीनाथ,
अध्यक्ष एमेरिटस शंकर नेत्रालय,
चेन्नई

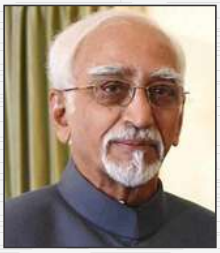

2013 - 16वां पुरस्कार
महामहिम **श्री एम. हामिद अंसारी,**
उपराष्ट्रपति,
भारत

2012 - 15वां पुरस्कार
महामहिम **डॉ. के. रोसैया,**
राज्यपाल,
तमिलनाडु

2011 - 14वां पुरस्कार
महामहिम **श्री.एम. के. नारायणन,**
राज्यपाल, पष्चिम बंगाल

2010 - 13वां पुरस्कार
प्रो. एम.एस. स्वामीनाथन,
अध्यक्ष एमेरिटस,
एम. एस. स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन, चेन्नई

2008 - 11वां और 12वां पुरस्कार
महामहिम **श्रीमती प्रतिभा पाटिल,**
राष्ट्रपति, भारत

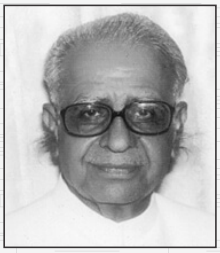

2006 - 10वां पुरस्कार
महामहिम **श्री. टी.एन. चतुर्वेदी,**
राज्यपाल कर्नाटक

2005 - 9वां पुरस्कार
महामहिम **श्री. सुरजीत सिंह बरनाला,**
राज्यपाल, तमिलनाडु

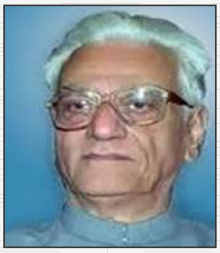

2003 - 7वां और 8वां पुरस्कार
महामहिम **श्री. के.आर मलकानी,**
उपराज्यपाल, पांडिचेरी

2000 - षष्टम पुरस्कार
श्री. पी.टी.आर पलनीवेलराजन,
माननीय अध्यक्ष, तमिलनाडु विधानसभा

1999 - पंचम पुरस्कार
डॉ. एम. करुणानिधि,
माननीय मुख्यमंत्री, तमिलनाडु

1998 - चतुर्थ पुरस्कार
महामहिम **श्री. कृष्ण कांत,**
उपराष्ट्रपति, भारत

1997 - तृतीय पुरस्कार
श्री कर्ण सिंह,
माननीय राज्य सभा सदस्य

1996 - द्वितीय पुरस्कार
श्री. सी. सुब्रमण्यम,
पूर्व राज्यपाल, महाराष्ट्र

1995 - प्रथम पुरस्कार
महामहिम **श्री के. आर. नारायणन,**
उप उपराष्ट्रपति, भारत

25 वें महावीर पुरस्कार के विजेता

25वें महावीर पुरस्कार के लिए देशभर के 24 राज्यों और पांच केंद्रशासित प्रदेशों से 310 नामांकन प्राप्त हुए। इन पर विचार मंथन किया गया, जिनमें से चयन समिति ने अलग-अलग कार्यक्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ मानव प्रयास करने वाले इन चार विजेताओं को सम्मानित करने का निर्णय किया।

अहिंसा और शाकाहार
पीपल फॉर एनिमल्स,
सिरोही, राजस्थान
स्वर्गीय श्री अमित देओल द्वारा संस्थापित

शिक्षा
श्री सत्यनारायणन मुंडयूर,
तेजू,
अरुणाचल प्रदेश

चिकित्सा
विवेकानंद मिशन आश्रम
नेत्र निरामय निकेतन,
हल्दिया, पश्चिम बंगाल
श्री स्वामी बिश्वनाथनंद द्वारा प्रतिनिधित्व

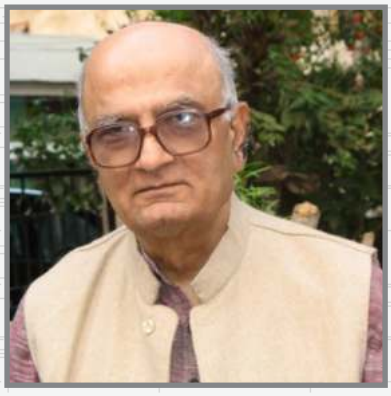

सामुदायिक और सामाजिक सेवा
नागालैंड गांधी आश्रम,
चुचुयिमलंग, नागालैंड
स्वर्गीय श्री नटवर ठक्कर द्वारा संस्थापित

पीपल फॉर एनिमल्स, सिरोही, राजस्थान

अहिंसा और शाकाहार

पीपल फॉर एनिमल्स, सिरोही एक अत्याधुनिक पशु कल्याण संघठन व पशु आश्रय स्थल है जिसकी स्थापना 1988 में की गई। पशुओं के कल्याण को समर्पित यह संगठन वर्तमान में क्षेत्र के करीब 204 गांवों के लगभग 4 लाख से अधिक मवेशियों को चिकित्सा व उपचार की सुविधा उपलब्ध करवा रहा है। पीएफए पशु चिकित्सालय मोबाइल क्लिनिक, ऑपरेशन थियेटर की सुविधा से युक्त है जहाँ मूक मवेशियों के लिए दो एम्बुलेंस 24 घंटे चिकित्साकर्मी की सेवाओं के साथ उपलब्ध रहती है। यह देशभर के बुचड़खानों से मुक्त करवाए जाने वाले ऊंटों का आश्रयस्थल है जिसे सबसे बड़े ऊंट बचाव केंद्र का श्रेय प्राप्त है। संगठन के द्वारा अब तक 630 गांवों में पशु चिकित्सा शिविर आयोजित कर 17,000 से अधिक मूक मवेशियों का उपचार किया गया। जिसमें 900 मवेशियों की शल्य चिकित्सा, 95,000 का टीकाकरण कर 2.66 लाख से अधिक भेड़- बकरियों को कृमि से मुक्त करवाने का कार्य उल्लेखनीय है।

इसके साथ-साथ पीएफए के द्वारा मूक मवेशियों, गधों, कुत्तों व अन्य जंगली जानवरों और मूक परिंदों के लिए भी बचाव आश्रयों का संचालन किया जा रहा है। पीएफए पशु क्रूरता और वन्यजीवों की तस्करी को लेकर सजग संगठन है। संगठन ने अपने उत्तरदायित्वों को विस्तार देते हुए बेसहारा जानवरों को गोद लेने की पहल भी प्रारम्भ की है जिससे मूक प्राणियों को अपनत्व और आहार मिल सके।

वर्तमान में पीपल फॉर एनिमल्स सिरोही जिस मुकाम पर है, उसमें श्री अमित देओल का महत्वपूर्ण योगदान है। राजस्थान में चाहे सुखे का दौर आया हो या फिर अकाल का इन्होने कभी भी मवेशियों के चारे-पानी में कमी नहीं आने दी। पीएफए सिरोही के संस्थापक सचिव रहे श्री देओल वर्तमान में हमारे बीच में नहीं है, उनका आकस्मिक निधन जीवदया के क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों और संस्थाओं को सदैव खलता रहेगा। हम परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि देओल के परिवार को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह संगठन श्री देओल के पदचिन्हों पर चलते हुए मवेशियों के प्रति करुणा भाव रखते हुए, सदैव उनके कल्याण के लिए समर्पित रहेगा।

श्री सत्यनारायणन मुंडयूर

तेजू, अरुणाचल प्रदेश

शिक्षा

पूर्वोत्तर भारत के लोगों के लिए श्री सत्यनारायणन मुंडयूर नाम से अपरिचित नहीं है। बच्चों व युवाओं में अंकल मूसा के नाम से लोकप्रिय मुंडयूर मूलतः केरल के निवासी है। इनके मन में पूर्वोततर राज्यों में शिक्षा की लौ जगाने का ऐसा जज्बा जागा कि उन्होंने अरुणाचल प्रदेश को ही अपनी कर्मस्थली बना लिया। अपनी इस मुहिम को पूरा करने के लिए अंकल मूसा ने 1979 में आयकर विभाग के उच्च पद से त्यागपत्र दे दिया। अंकल मूसा विगत 43 वर्षों से पहाड़ी बच्चों को शिक्षा से जोड़ने और उनमें पढ़ने की आदत विकसित करने की मुहिम छेड़े हुए हैं। प्रारम्भिक दौर में अंकल मूसा ने बच्चों को जोड़ने के लिए दूरदराज के गांवों में पहुंचकर पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाना प्रारम्भ किया। वर्ष 2007 में इन्होंने क्रांतिकारी कदम उठाते हुए विवेकानंद ट्रस्ट तथा एसोसिएशन ऑफ राइटर्स एंड इलस्ट्रेटर्स फॉर चिल्ड्रन के संयुक्त सहयोग से अरुणाचल प्रदेश के तेजू में बम्बूसा लाइब्रेरी की स्थापना की। यह लोहित युवा पुस्तकालय आंदोलन का पहला महत्वपूर्ण कदम था। इसके पश्चात आदिवासी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए पहाड़ी मार्गों पर स्थित वाकरो, चोंगखम, अंजॉउ और लाथाओ सरीखे स्थानों पर पुस्तकालय संचालित किए जाने लगे।

इस मुहिम से जुड़े लोग व प्रकाशन कम्पनियां भी इन पुस्तकालयों तक अपनी पुस्तकें पहुंचाकर अपना योगदान दे रही हैं। साथ ही अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल रहे महामहिम श्री जे.जे. सिंह सहित कई तत्कालीन आईएएस अधिकारियों व मंत्रियों ने भी अंकल मूसा के इन प्रयासों की सराहना की है। वर्तमान में इन पुस्तकालयों की संख्या 13 तक पहुंच चुकी है। इन पुस्तकालयों में अब सिर्फ किताबें ही नहीं पढ़ी जाती, बल्कि यहां बच्चे कहानी सुनाने, पुस्तक वाचन एवं प्रश्नोत्तरी की विधा में भी पारंगत हो रहे हैं।

पुस्तकालय आंदोलन की इस मुहिम के श्री सत्यनारायणन अकेले ही योद्धा और सेनापति है। इनकी यह सोच अभूतपूर्व है, जो युवाओं के मन में पढ़ने और शिक्षित बनने का बीजरोपण कर रहे हैं, निसंदेह आने वाले दौर में श्री सत्यनारायणन का यह आंदोलन देश में विकास की अलग ही बयार लाएगा।

विवेकानंद मिशन आश्रम नेत्र निरामय निकेतन

हल्दिया, पश्चिम बंगाल

चिकित्सा

पश्चिमी बंगाल के हल्दिया का विवेकानंद मिशन आश्रम नेत्र रोगियों के अंधियारे जीवन में रोशनी लाने की दिशा में एक मजबूत स्तम्भ है। सेवा के उद्देश्य से विवेकानंद मिशन आश्रम द्वारा 1994 में चैतन्यपुर (पूर्व मेदिनीपुर) और 2014 में चंडी (दक्षिण 24 परगना) में नेत्र चिकित्सा केन्द्रों की स्थापना की गई। इन केन्द्रों ने आर्थिक तंगहाली के चलते नेत्र चिकित्सा सुविधा से वंचित ग्रामीण क्षेत्रों के 1.5 करोड़ लोगों की आँखों को उजियारा प्रदान किया है। यहां पर नेत्र रोगियों को मोतियाबिंद, कॉर्निया, ग्लूकोमा, रेटीना से सम्बन्धित तकलीफ, डायबिटिक रेटिनोपैथी का प्रभावी उपचार सुलभता से किया जा रहा है। साथ ही यह केन्द्र चाइल्ड आई केयर, कॉन्टैक्ट लैंस, लो विजन रिहैबिलिटेशन में भी मरीजों को राहत प्रदान कर रहे हैं। एक आकलन के मुताबिक नेत्र निरामय निकेतन अस्पताल में प्रतिवर्ष 2.3 लाख से अधिक नेत्र रोगियों का ईलाज और 26,000 से अधिक ऑपरेशन किए जाते हैं। इस मिशन की यह खासियत है कि यहां आने वाले 60 प्रतिशत नेत्र रोगियों का ऑपरेशन निःशुल्क किया जाता है एवं आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों को निःशुल्क उपचार प्राप्त होता है। न्यूनतम लागत व गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधा का ही परिणाम है कि पश्चिम बंगाल ही नहीं, वरन उडिशा, झारखंड, बिहार और पड़ोसी देश बांग्लादेश के विभिन्न जिलों के कमजोर तबके के लोग भी आंखों का उपचार करने यहां पहुंचते हैं।

यहां आने वाले लोगों को समुचित उपचार मिले, इस उद्देश्य से यह संगठन आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर 18 दृष्टि केंद्रों (प्राथमिक नेत्र देखभाल केंद्र) का संचालन कर रहा है। जिनके माध्यम से गांव-कस्बों तक चिकित्सा सुविधा पहुंचाने के लिए निःशुल्क नेत्र जांच शिविर आयोजित किए जाते हैं। स्कूली विद्यार्थियों के लिए नेत्र स्वास्थ्य और कम दृष्टि स्क्रीनिंग परियोजनाओं का संचालन किया जा रहा है, जिससे प्रतिवर्ष 1,50,000 बच्चे लाभान्वित हो पा रहे हैं। विवेकानंद मिशन आश्रम नेत्र निरामय निकेतन के पास पूर्ण रूप से सेवा को समर्पित 310 योग्य चिकित्साकर्मियों की टीम है जिनमें 18 पूर्णकालिक आवासीय चिकित्सक शामिल है।

नागालैंड गांधी आश्रम

चुचुयिमलंग, नागालैंड

सामुदायिक एवं समाज सेवा

श्री नटवर जी ठक्कर के द्वारा नागालैंड के चुचुयिमलंग गांव में 1955 में नागालैंड गांधी आश्रम की स्थापना की गई। महात्मा गाँधी व काका कालेलकर के जीवन से प्रभावित ठक्कर 23 वर्ष की आयु में महाराष्ट्र से नागालैंड गए वहां जाकर श्री ठक्कर और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लेंटीना आओ नागालैंड में गांधीवादी दर्शन के प्रचार-प्रसार में जुट गए। समय के साथ-साथ उनके विचारों को महत्व मिलने लगा और देखते ही देखते श्री नटवर जी ठक्कर नागालैंड के गांधी के रूप में विख्यात हो गए।

जब श्री ठक्कर 1955 में नागालैंड पहुंचे तब यह क्षेत्र हिंसा के बुरे दौर से गुजर रहा था। ऐसे वक्त में उन्होंने समाज सेवा के माध्यम से सद्भाव को बढ़ावा देते हुए आसपास के गांवों में शांति स्थापना की पहल प्रारम्भ की। साथ ही श्री ठक्कर ने स्कूल छोड़ चुके बच्चों और शारीरिक रूप से निशक्त युवाओं के लिए एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र प्रारम्भ किया एवं स्थानीय निवासियों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने हेतु खादी और ग्रामोद्योग गतिविधियां प्रारम्भ करवाई। राज्य रेशम उत्पादन और कार्यक्रम विभाग तथा केंद्रीय रेशम बोर्ड के सहयोग से प्रशिक्षण शिविर, कार्यशालाओं और सेमिनार के माध्यम से स्थानीय लोगों को रेशम उत्पादन में पारंगत किया एवं आसपास के 11 गांवों में मधुमक्खी पालक स्वयं सहायता समूहों का संचालन किया जिससे यहां के लोगों के जीवन स्तर व आय में सुधार संभव हो पाया।

ठक्कर जी के प्रयासों से व इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से केन्द्र पर 6,000 से भी अधिक कम्प्यूटरों का निर्माण किया गया। जिससे यहाँ 2006 में राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना संभव हो सकी। महात्मा गांधी मानव विकास अकादमी के संचालन में श्री ठक्कर के प्रयासों से प्रभावित टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान भी इनसे जुड़ गया। वास्तव में नागालैंड गांधी आश्रम वर्षों से सामाजिक, आर्थिक विकास और कल्याण के लिए प्रयासरत है जो शांति, सद्भावना और स्वावलंबन की मिसाल प्रस्तुत कर रहा है। वर्ष 2018 में 63 वर्ष की आयु में श्री नटवर जी ठक्कर सबका साथ छोड़ गए। अब उनकी पत्नी लेंटीना और बेटा डॉ. आओतोशी इस मुहिम को अनवरत आगे बढ़ा रहे हैं।

राज्यवार और श्रेणीवार पुरस्कारों का वितरण

	अहिंसा और शाकाहार	शिक्षा	चिकित्सा	समुदायिक एवं समाज सेवा	महिला सामाजिक उद्यमी	कुल
आंध्र प्रदेश	1			1		2
अरुणाचल प्रदेश		1		1		2
असम		1	1			2
बिहार		1		2		3
छत्तीसगढ				3		3
नई दिल्ली	2		1		1	4
गुजरात	1	2				3
हरियाणा				1		1
झारखंड			1	2		3
कर्नाटक	2	2		2		6
केरल			1			1
मध्य प्रदेश	2		2	2		6
महाराष्ट्र	3	1	2	4		10
मणिपुर				1		1
नागालैंड				1		1
उड़ीसा	1	1				2
पंजाब	1					1
राजस्थान	3	2		4		9
तमिलनाडु	3	5	7	1		16
तेलंगाना	1		1			2
त्रिपुरा				1		1
उत्तराखंड		1	1			2
पश्चिम बंगाल	1		2			3
कुल	21	17	19	26	1	84

महावीर पुरस्कार विजेता

महावीर पुरस्कार	अहिंसा और शाकाहार	शिक्षा और चिकित्सा	समुदायिक और समाज सेवा
प्रथम 08.11.1995			वीरायतन, राजगीर, बिहार
द्वितीय 08.09.1996	श्री एस जगन्नाथन और श्रीमती कृष्णामल जगन्नाथन, गांधीग्राम, तमिलनाडु		श्री रामकृष्ण मिशन, बस्तर, छत्तीसगढ़
तृतीय 20.04.1997	श्री रतनलाल सी बाफना, जलगांव, महाराष्ट्र		श्री अन्ना हजारे, रालेगांव, महाराष्ट्र
चतुर्थ 09.04.1998	साधु वासवानी मिशन, पुणे, महाराष्ट्र	श्री अविनाशीलिंगम एजुकेशन ट्रस्ट इंस्टीट्यूशंस, कोयंबटूर, तमिलनाडु	डॉ.प्रकाश मुरलीधर आमटे और डॉ.मंदाकिनी प्रकाश आमटे, हेमलकासा, महाराष्ट्र
पंचम 03.04.1999	श्रीमती मेनका गांधी, पीपल फॉर एनिमल्स, नई दिल्ली	डॉ.जी.वैंकटस्वामी, अध्यक्ष, अरविंद आई हॉस्पिटल एंड पोस्ट ग्रेज्युएट इंस्टीट्यूट ऑफ ऑप्थाल्मोलॉजी, मदुरै, तमिलनाडु	भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, जयपुर, राजस्थान
षष्टम 05.10.2000	डॉ.कल्याण मोतीलाल गंगवाल, पुणे, महाराष्ट्रर	कैंसर इंस्टीट्यूट (डब्ल्यू.आइ.ए), चेन्नई, तमिलनाडु	त्रिपुरा आदिवासी महिला समिति, अगरतला, त्रिपुरा
सप्तम 22.03.2003	स्वर्गीय डॉ.नेमीचंद जैन, इंदौर, मध्य प्रदेश	डॉ. एच.सुदर्शन, विवेकानंद गिरिजन कल्याण केंद्र, येलंदूर, कर्नाटक	भारत सेवाश्रम संघ, जमशेदपुर, झारखंड
अष्टम 22.03.2003		1. विवेकानंद रॉक मेमोरियल और विवेकानंद केंद्र, कन्याकुमारी, तमिलनाडु 2. मरुधर महिला शिक्षण संघ, खिमेल, राजस्थान	डॉ.एस.वी.आदिनारायण राव, विषाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश
नवम 14.02.2005	श्री सिद्धराज ढड्डा,जयपुर, राजस्थान	उत्तराखंड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा, उत्तराखंड	स्वामी विवेकानंद यूथ मूवमेंट, सर्गुर, कर्नाटक
10 वां 11.01.2006		1.डॉ. शरदकुमार दीक्षित, पुणे, महाराष्ट्र 2.डॉ. एस.एस.बद्रीनाथ, अध्यक्ष, शंकर नेत्रालय, चेन्नई, तमिलनाडु	श्री राजमल एस जैन, पाली, राजस्थान
11 वां 19.05.2008	श्री भरत अमृतलाल कोठारी, राजपुर, गुजरात	डॉ.शिव कुमार सरीन, नई दिल्ली	आचार्य डॉ.किशोर कुणाल, पटना, बिहार
12 वां 19.05.2008	एक्षन फॉर प्रोटेक्षन ऑफ वाइल्ड लाइफ एनिमल्स, केंद्रपाड़ा, उड़ीसा	महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, सेवाग्राम, महाराष्ट्र	अमर सेवा संगम, तिरूनेलवेली, तमिलनाडु
13 वां 09.07.2010		ट्राइबल हेल्थ इनिसिएटिव, धर्मपुरी, तमिलनाडु	1. श्री करणी नगर विकास समिति, कोटा, राजस्थान 2. स्वामी विवेकानंद एकीकृत ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्र, पावागड़ा,कर्नाटक

महावीर पुरस्कार	अहिंसा और शाकाहार	शिक्षा	चिकित्सा	समुदायिक और समाज सेवा
14 वां 09.11.2011	श्री दयानंद स्वामीजी, बेंगलुरु, कर्नाटक	द इंडियन प्लैनेटरी सोसाइटी, मुंबई, महाराष्ट्र	वॉल्यंटरी हेल्थ सर्विसेज, चेन्नई, तमिलनाडु	स्नेहालय सोशल चौरिटेबल ट्रस्ट, सोलापुर, महाराष्ट्र
15 वां 10.10.2012	श्री चिरंजी लाल बागरा, कोलकाता, पश्चिम बंगाल	कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोषियल साइंसेज, भुवनेश्वर, उड़ीसा	डॉ अनंत सिन्हा, रांची, झारखंड	श्री रामकृष्ण मिशन अस्पताल, ईटा नगर, अरुणाचल प्रदेश
16 वां 04.06.2013	श्री मोहम्मद शफीक खान, सागर, मध्य प्रदेश	गांधी विद्या मंदिर, चुरू, राजस्थान	डॉ. आर. रवि कन्नन, सिलचर, असम	श्रीमती सुशीला बोहरा, जोधपुर, राजस्थान
17 वां 14.02.2015	ब्लू क्रॉस ऑफ इंडिया, चेन्नई, तमिलनाडु	श्री शारदा आश्रम, उलुंधुरपेट, तमिलनाडु	डॉ. सुनील सैनन, मसूरी, उत्तराखंड	श्रीमती फूलबसनबाई यादव, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़
18 वां 21.08.2015	विशाखा सोसायटी फॉर प्रोटेक्शन एंड केयर ऑफ एनिमल्स विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश	कस्तूरबा गांधी कन्या गुरुकुलम, वेदारण्यम, तमिलनाडु	सेन एंड एंथुसिअस्ट वॉलंटियर्स एसोसिएषन ऑफ कलकत्ता, कोलकाता, पश्चिम बंगाल	विकास भारती, रांची, झारखंड
19 वां 20.09.2016	कम्पेशन अनलिमिटेड प्लस एक्शन, बेंगलुरु, कर्नाटक	डॉ. सपम नबकिशोर सिंह, सिलचर, असम	डॉ. आर.वी. रमनी शंकर आइ केयर इंस्टीट्यूषंस, कोयंबटूर, तमिलनाडु	श्रीमती शमशाद बेगम, दुर्ग, छत्तीसगढ़
20 वां 08.09.2017	पशु सहायता चेरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर, राजस्थान	ऐम फॉर सेवा, चेन्नई, तमिलनाडु	डॉ. एम.सी. नाहटा, इंदौर, मध्य प्रदेश	अर्पणा रिसर्च एंड चेरिटी ट्रस्ट, करनाल, हरियाणा
21 वां 02.12.2018	डॉ. शिरानी परेरा, पीपल फॉर एनिमल्स, चेन्नई, तमिलनाडु	श्री आनंद कुमार, सुपर 30, पटना, बिहार	भगवान महावीर जैन रिलीफ फाउंडेशन ट्रस्ट, हैदराबाद, तेलंगाना	रूरल हेल्थ ऑर्गेनाइजेषन, इंफाल, मणिपुर
22 वां 29.01.2021	फेडरेशन ऑफ इंडियन एनिमल प्रोटेक्शन ऑर्गेनाइजेशन, नई दिल्ली	पंचमहल अनुसूचित जाति शिक्षा ट्रस्ट, अदादरा, गुजरात	जीवोदया हॉस्पिटल फॉर कैंसर पेंसेंट्स चेन्नई, तमिलनाडु	ग्रामीण आदिवासी समाज विकास संस्थान, सौसर, मध्यप्रदेश
	श्रीमती श्यामलता मोहन राज, नई दिल्ली - सफल महिला सामाजिक उद्यमिता के क्षेत्र में			
23 वां 29.01.2021	बाबा पल्ला सिंह गौशाला, बाबा बकाला, पंजाब	मानव कल्याण ट्रस्ट, नवसारी, गुजरात	पैन एंड पेलिएटिव केअर सोसायटी, कोझीकोड, केरल	सेवाधाम आश्रम, उज्जैन, मध्यप्रदेश
24 वां 02.03.2022	श्री जसराज श्रीश्रीमाल, तेलंगाना	महिला अभिवृद्धि मातु संरक्षण संस्थान, बेलगाम, कर्नाटक	सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय, चित्रकूट, मध्य प्रदेश	सेसायटी फॉर एजुकेशन, एक्शन एंड रिसर्च इन कम्युनिटी हेल्थ, गढ़चिरौली, महाराष्ट्र
25 वां 03.09.2022	पीपल फॉर एनिमल्स, सिरोही राजस्थान	श्री सत्यनारायणन मुण्डयूर, लोहित युवा पुस्तकालय के संस्थापक, तेजू, अरूणाचल प्रदेश	विवेकानंद मिशन आश्रम नेत्र निरामय निकेतन, हल्दिया, पश्चिम बंगाल	नागालेंड गांधी आश्रम, चुचुयिमलंग, नागालेंड

महावीर निबंध पुरस्कार

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामी के जियो और जीने दो एवं अहिंसा ही सर्वोपरि धर्म है के सन्देश से युवाओं को परिचित करवाने के उद्देश्य से महावीर निबंध पुरस्कार की शुरुआत की गई। पुरस्कार का उद्देश्य आज के युवाओं में शांति और सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व के भावों का विकास करना है। भगवान महावीर फाउंडेशन के द्वारा वर्ष 2016 से विद्यालय व महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों हेतु महावीर निबंध प्रतियोगिता की शुरूआत कर विजेताओं के लिए महावीर पुरस्कार की घोषणा की गई। तमिल एवं अंग्रेजी भाषा की इस प्रतियोगिता के प्रति युवावर्ग का उत्साह इस कदर है कि अब तक पांच लाख युवा इसमें भाग ले चुके हैं। फाउंडेशन के द्वारा विजेता प्रतिभागियों को 1000 से 50 हजार रूपए तक की राशि से पुरस्कृत किया जा रहा है। इस वर्ष फाउंडेशन का निबंध प्रतियोगिता ऑनलाइन करवाने का प्रस्ताव है।

एक नजर आकड़ों पर

2016 से 2021 तक 91,918 विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों ने भाग लिया

2016 से 2021 तक 24,538 महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों ने भाग लिया

कुल 116456 प्रतिभागियों ने भाग लिया

प्रतियोगिता में 384 प्रतिभागी विजेता रहे

विजेताओं को 18.04 लाख रुपये की राशि से नवाजा गया

सियाट के सिंघवी

उद्यमिता और परोपकार ही जिनकी पहचान

राजस्थान के मारवाड़ी लोगों ने व्यापार एवं उद्यमशीलता के साथ-साथ अपने परोपकारी सेवाकार्यों के कारण सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपनी एक अलग पहचान और प्रतिष्ठा कायम की है। सिंघवी परिवार भी अपने अंतर्मन में ऐसे ही गुणों को सहेजे हुए हैं। अपनी मेहनत और दूरदर्शी सोच से व्यापार के शिखर पर पहुचनें वाले सिंघवी परिवार को अपनी मातृभूमि सियाट से विशेष लगाव है। परोपकार के भावों से पुष्पित-पल्लवित और संस्कारित सिंघवी परिवार आज भी अपने गांव के विकास के लिए प्रयासरत है। तत्कालीन जोधपुर रियासत के मारवाड़ क्षेत्र का यह छोटा सा गांव आज पाली जिले के सोजत उपखंड क्षेत्र का हिस्सा है।

आईदानमल जी सिंघवी के परिवार का मारवाड़ से दिसावर गमन का सफ़र

श्री एन. सुगालचंद जैन सियाट गांव के श्री आईदानमल जी के पोते व श्री नथमलजी जी जैन के पुत्र है। सिंघवी परिवार के पथ प्रदर्शक श्री आईदानमल जी परोपकारी मूल्यों के प्रबल समर्थक और प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे। मारवाड़ी व्यापारिक गुणों से परिपूर्ण श्री आईदानमल जी 20वीं सदी के शुरूआती दिनों में अपने परिवार के साथ व्यापार की राह पर निकल पड़े। वे गुजरात में ताप्ती नदी के तट (नंदुरबार) के निकट एक छोटे से गांव कोकुरमुंडा में पहुंचे। श्री आईदानमल जी ने इस गांव को व्यापार के अनुकूल मानकर अपनी कर्मस्थली बनाने का निर्णय लिया और अपने तीन भाइयों को गुजरात के कोकुरमुंडा में व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित किया। यहां अपने भाइयों को व्यापार में परिपक्व करने के पश्चात श्री आईदानमल जी जीवन में आगे बढ़ते हुए नए अवसरों की तलाश में सन् 1920 में तत्कालीन मद्रास (ट्रिप्लिकेन, चेन्नई) पहुंच गए। अपनी मंजिल को ओर अधिक सुदृढ़ व बेहतर बनाने के लिए उन्होंने प्रारम्भ में परिवार का परम्परागत साहूकारी का व्यवसाय शुरू किया। इसमें उन्हें सफलता भी मिलने लगी, लेकिन तभी एक बड़ा धक्का लगा।

महज दो वर्ष पश्चात ही वर्ष 1922 में श्री आईदानमल जी का चेन्नई में निधन हो गया। श्री आईदानमल जी के दो पुत्र और एक पुत्री थी। अकस्मात हुई इस क्षति को परिवार सह नहीं पाया और मजबूरन पूरे परिवार को राजस्थान में अपने गांव सियाट लौटना पड़ा। श्री आईदानमल जी के छोटे पुत्र श्री नथमलजी जी जैन,अपने पिता के सपनों को पूरा करने के लिए दक्षिण जाने का प्रयास कर रहे थे और 10 वर्ष पश्चात उनके यह प्रयास रंग लाए। अपने गांव से 1930 में वे पुनः चेन्नई पहुंच गए, जहां उन्होंने दो जगहों पर कार्य कर व्यापार का ज्ञान अर्जित किया। तत्पश्चात वे स्वयं का साहूकारी का व्यवसाय प्रारम्भ कर जीवन में निरंतर आगे बढ़ते रहे।

सिंघवी : विरासत में मिले परोपकार के भाव

परोपकारों के भावों से परमार्थ की सेवा में जुटे श्री एन. सुगालचंद जैन को यह संस्कार अपने सिंघवी परिवार से विरासत में मिले थे। परिवार में परोपकार की परम्परा सदियों से अनवरत चली आ रही थी, जिसे उनके पिता श्री नथमल जी जैन ने भी अंगीकार किया और इसे आगे बढ़ाया। श्री नथमल जी जैन का मानना था कि जीवन में समाज ही सर्वस्व देता है, ऐसे में परमार्थ की दिशा में धन खर्च कर ही समाज का ऋण अदा किया जा सकता है। वे भले ही चेन्नई में स्वयं को स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन उन्होंने कभी भी अपनी मातृभूमि से नाता नहीं तोड़ा। सीमित संसाधनों के बावजूद श्री नथमल जी अपनी कमाई का एक निश्चित भाग राजस्थान के अपने मूल गांव सियाट में परमार्थ के कार्यों पर खर्च करते रहे। वे अपने परिवार की परम्पराओं, संस्कारों से इस कदर जुड़े हुए थे कि अक्सर वे चेन्नई से अपने गांव सियाट पहुंचते और अपने इर्द-गिर्द बसने वाले वंचित और कमजोर तबके के लोगों का दर्द बांटकर उनके कल्याण के लिए खुले हाथों से दान करते। मूक जीवों की सेवा को लेकर भी वे काफी सजग थे। उन्होंने उन दिनों में ही मूक मवेशियों के चारागह की स्थापना करवाई थी, जो आज भी संचालित है।

श्री एन. सुगालचंद जैन की माताजी श्रीमती जड़ावबाई सोजतरोड के निकटवर्ती धुंधला गांव की निवासी थी। सियाट से उनका पीहर महज चार-पांच किलोमीटर की दुरी पर ही था। श्रीमती जड़ाव बाई आंतरिक रूप से मजबूत और उदारता की मिसाल थी। वे अपने पति श्रीनथमल जी जैन के सुख-दुःख में सहभागी बनकर रही एवं अपने पति के जीवन के उतार-चढ़ाव भरे दौर में सदैव उन्हें हौंसला देती रही। श्रीमती जड़ावबाई ने अपने बच्चों में सुसंस्कारों का बीजारोपण किया व अपने बच्चों को समाज के प्रति कृतज्ञता का भाव रखने और कमजोरों की मदद करने का पाठ पढाया। लेकिन, ईश्वर की नियती को कुछ ओर ही मंजूर था, सन् 1954 में महज 28 वर्ष की अल्पआयु में ही श्रीमती जड़ावबाई परिवार का साथ हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ गई। ऐसे में श्री नथमल जैन पर व्यापार के साथ ही अपनी संतानों की जिम्मेदारी भी आ गई, जिसे नथमल जी ने बखूबी संभाला और व्यापार को भी आगे बढ़ाया। जीवन के हर कदम पर अपने बच्चों को सेवा, परमार्थ और जीवदया की सीख देने वाले सिंघवी परिवार के मुखिया श्री नथमलजी 90 के दशक में श्रीचरणों में विलीन हो गए। उन्होंने 1991 में चेन्नई में अंतिम सांस ली।

कदम-कदम पर बाधाओं से सीखा, छू लिया सफलता का आसमां

सिंघवी परिवार के वर्तमान मुखिया श्री एन. सुगालचंद जैन नवाचारों और विकास के हिमायती रहे हैं। जब वे महज तीन माह के थे, तभी 1944 में उनके पिता श्री नथमल जी जैन और माता श्रीमती जड़ावबाई उन्हें चेन्नई लेकर आ गए थे। बचपन से ही कुछ अलग कर गुजरने की महत्वाकांक्षा को मन में पाले श्री सुगालचंद ने अपने पिता की साहूकारी की छोटी सी दुकान में (ऋण व्यवसाय) व्यापार की बारीकियां सीखी। उसके पश्चात अपनी मंजिल को प्राप्त करने के लिए अलग राह तलाशना प्रारम्भ किया। जीवन में किसी भी मोड़ पर नहीं घबराने की सोच के साथ कार्य के प्रति समर्पण भावना, महत्वाकांक्षी सोच और बाधाओं को परास्त करने के जज्बे ने ही श्री एन. सुगालचंद जैन को एक सफल उद्यमी के रूप में स्थापित होने की राह प्रशस्त की। श्री जैन विगत 78 वर्षों से चेन्नई में अपने व्यापारिक कौशल का लोहा मनवा रहे हैं।

श्री सुगालचंद ने शुरूआती दौर में तमिल भाषा में शिक्षा लेने के बाद हिंदी भाषा में पढ़ाई पूरी की। श्री जैन ने 1962 में व्यापार जगत में कदम रखा। उन्होंने व्यापार के हर क्षेत्र में हाथ आजमाए और जीवन में आये अवसरों का लाभ उठाते गए। प्रारंभिक दौर में श्री जैन ने पेन बेचने और सोजत की मेहंदी का पाउडर बेचने का कार्य भी किया, बीमा कम्पनी में एजेंट भी बने। तत्कालीन दौर में श्री जैन ने साहूकारी के व्यापार में भी नवाचार किया। सोने और हीरे के आभूषणों में हाथ आजमाते हुए छोटे उद्योग प्रारम्भ किए और मद्रास कोर्पोरेशन को पशु आहार की आपूर्ति भी की। अपनी प्रतिभा के बल पर जीवन में सफलता अर्जित करने के लिए लगन से जुटे श्री सुगालचंद ने 1968 में लॉटरी की दुनिया में कदम रखा। अपने नवाचारों के जरिए अल्प समय में ही उन्होंने इस क्षेत्र में अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया और देशभर में एक सफल उद्यमी के रूप में अपने पंख फैला दिए। इस व्यापार में सफलता के शिखर पर पहुंचने के बाद श्री एन. सुगालचंद जैन ने परोपकार के कार्यों में भी भागीदारी निभानी शुरू कर दी। श्री जैन ने देश के अलग-अलग राज्यों की सरकारों को भी आपदाओं के दौर में संसाधन जुटाने में मदद की।

श्री जैन भले ही सफलता की नाव पर सवार होकर व्यावसायिक क्षेत्र में कीर्तिमान रचते गए, लेकिन उनकी सीखने की ललक कभी कम नहीं हुई। यही कारण रहा कि उन्होंने अपनी व्यस्ततम व्यापारिक गतिविधियों से समय निकाला और अक्टूबर 1997 में 53 वर्ष की उम्र में उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में स्नातक किया। लेकिन, ज्ञान की यह पिपासा कहां शांत होने वाली थी। उच्च शिक्षा लेने को आतुर

श्री सुगालचंद जैन ने 2008 में मदुरै कामराज विश्वविद्यालय से एनजीओ प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा किया और 2013 में मद्रास विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में एम.एस.सी. की पढ़ाई पूरी की।

व्यापारिक विशिष्टताओं के कारण शिखर पर पहुंच चुके श्री एन. सुगालचंद जैन के जीवन में एक दौर ऐसा भी आया, जब उन्हें लगा कि उनके जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति हो गई है। अब उन्हें समाज के लिए कुछ कदम उठाने चाहिए। इसपर श्री सुगालचंद जैन, जैन श्रीसंतों और श्रीसाध्वियों के पास पहुंचे और अपने मन के विचारों से अवगत कराया। उनका मानना था कि समाज को कृतज्ञता के भाव से लौटाने का समय अब आ गया है। संत-साध्वियों ने उनकी राह प्रशस्त की और भगवान श्री महावीर स्वामी के शुभ आशीर्वाद से श्री सुगालचंद जैन ने 1974 से समाज के वंचितों और बेजुबानों को वृहद आच्छादित वटवृक्ष की छांव देने के उद्देश्य से सेवा, मदद और परोपकार के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भागीदारी निभानी शुरू कर दी। इस कड़ी में उन्होंने सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट और विद्या ज्योति चेरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की। समाज के आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की सहायता और उत्थान के प्रयासों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से भगवान महावीर फाउंडेशन की स्थापना की। जरूरतमंदों को चिकित्सा सुविधा मुहैया कराने की दिशा में भी कदम बढ़ाए। कैंसर संस्थान, शंकर नेत्रालय सरीखे धर्मार्थ संस्थानों से जुड़कर जरूरतमंदों के कल्याण का दायित्व निभाया। कई गैर सरकारी संगठनों की भी आर्थिक रूप से मदद की जो निस्वार्थ भाव से समाज के जरूरतमंद और पीड़ितों के जीवन स्तर में सुधार लाने को प्रयासरत है। जीवदया के क्षेत्र में भी खूब दान किया, जो आज भी अनवरत जारी है। श्री सुगालचंद जैन का विवाह श्रीमती चंद्राबाई से हुआ, इनके दो पुत्र और एक पुत्री है। श्री सुगालचंद जैन से विरासत में मिले व्यापारिक साम्राज्य को दोनों पुत्र व पौत्र आगे बढ़ा रहे हैं। श्री आईदानमल जी जैन का यह परिवार भारतीय मूल्यों और परम्पराओं को सहेजे हुए हैं। इसका असर वर्तमान में छठी पीढ़ी पर भी साफ देखने को मिलता है।

पुस्तकों से विशेष लगाव :

जीवन के 50 बसंत देखने के पश्चात स्नातक और स्नातकोत्तर में डिप्लोमा करने वाले श्री एन. सुगालचंद जैन को पुस्तकों से विशेष लगाव रहा है। श्री जैन की दूरदर्शी व परिवर्तनकारी सोच है कि श्रेष्ठ पुस्तकों के माध्यम से समाज में जागरूकता व बदलाव की बयार लाई जा सकती है। इसी उद्देश्य से श्री जैन ने जैन उपाध्याय अमर मुनि जी की कई पुस्तकों का अनुवाद और पुनर्मुद्रण करवाया है, जिसमें ब्लिस (अपरिग्रह दर्शन), द न्यूआंसज ऑफ ट्रूथ (सत्य दर्शन), डिस्टिल्ड एसेंस ऑफ नॉन वॉयलेंस (अहिंसा दर्शन), इक्यूनिमिटी - द आइडियल गर्ल (आदर्श कन्या), चेस्टिटी (ब्रह्मचर्य दर्शन) प्रमुख है। इसके अलावा उन्होंने उपाध्याय ऋषि प्रवीण मुनि जी की, हू इज ए सेंट भी प्रकाशित करवाई। इनके साथ ही श्री जैन ने सुगाल टाइम्स, रैफल रिजल्ट- अबाउट लॉटरी, लॉटरी मार्केट रिपोर्ट, लॉटरीज बियोण्ड फॉर्च्यून सरीखी पुस्तकें भी प्रकाशित करवाई जो कि समाज के लोगों के जीवन में उपयोगी साबित हुई।

उद्यमिता कौशल

श्री सुगलचंद जैन विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। श्री जैन अपनी व्यापारिक उद्यमशीलता के अनुभव और कौशल के विशिष्ट गुणों से कई गैर सरकारी संगठनों को भी लाभान्वित कर रहे हैं, जो कि निम्न है-

कैंसर इंस्टीट्यूट, प्रशासनिक निकाय सदस्य
शंकर नेत्रालय, बोर्ड सदस्य
एस.एस. जैन एजुकेशनल सोसायटी, सदस्य
श्री जैन मेडिकल रिलीफ सोसायटी, सदस्य
अवई होम, अध्यक्ष

इससे पहले श्री एन सुगालचंद जैन भारतीय विद्या भवन, वॉल्यंटरी हेल्थ सर्विसेज चाइल्ड ट्रस्ट अस्पताल, चेन्नई से भी जुड़े हुए रहे।

सिंघवी परिवार की छह पीढ़ियां

सिंघवी परिवार की छह पीढ़ियों पर एक दृष्टि

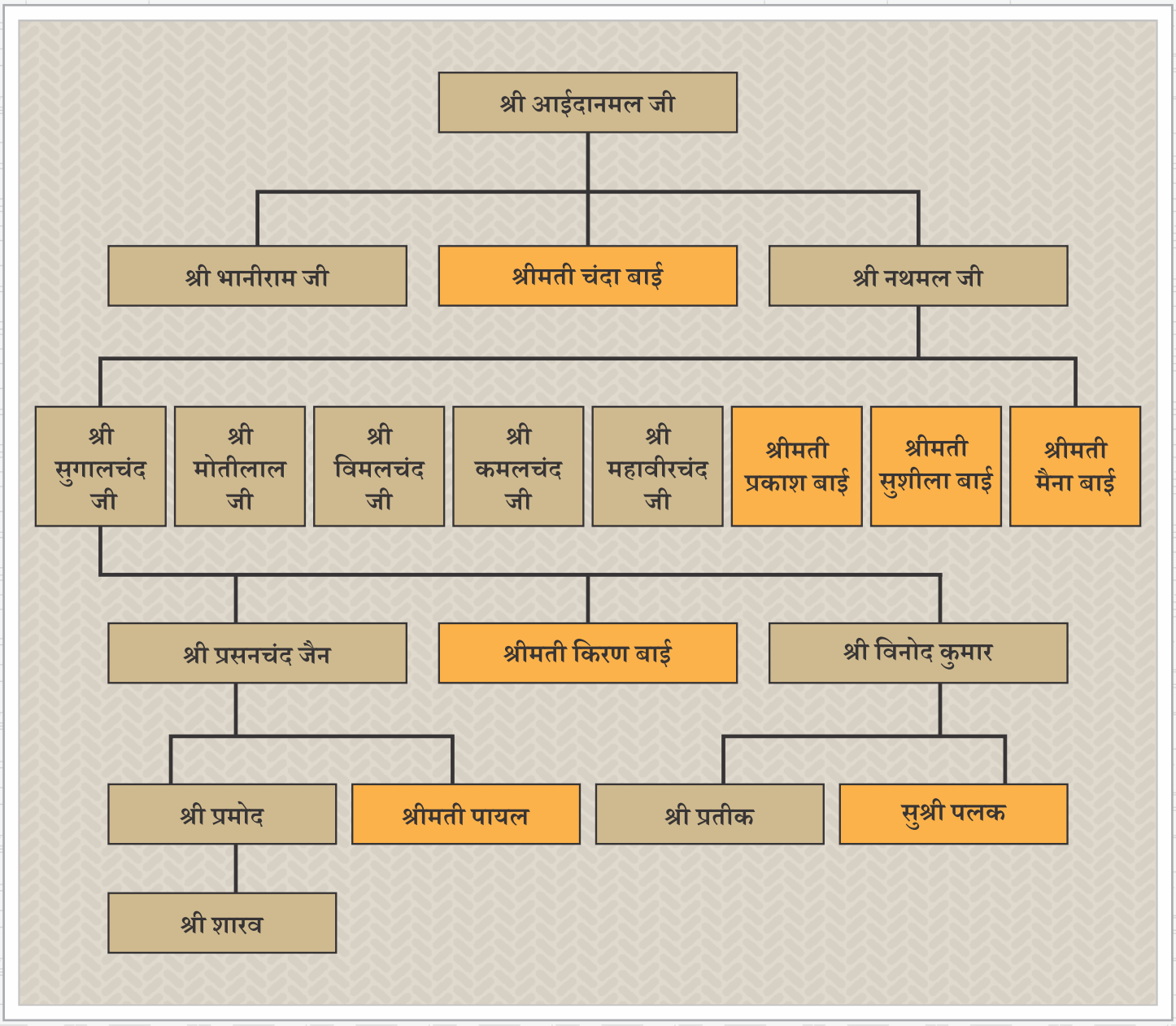

सुगाल ग्रुप

सुगाल ग्रुप के संस्थापक श्री एन. सुगालचंद जैन हैं। व्यापार के क्षेत्र में सुगाल ग्रुप देश का जाना-पहचाना नाम है। व्यापार की राह पर अग्रसर इस ग्रुप ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। हर क्षेत्र में अपनी कार्य कुशलता के बल पर पर्याप्त परिणाम पाने को आतुर यह ग्रुप भारतीय जीवन मूल्यों में सदैव आस्था, विश्वास व सम्मान रखता है। सुगाल ग्रुप के पास हर व्यापारिक क्षेत्र के अनुरूप अनुभवों से युक्त और विशिष्ट कार्य क्षमता से युक्त कर्मचारियों व अधिकारियों की एक ऐसी अनुशासित टीम है, जो इसे सफलता के आसमान का सितारा बनाए हुए हैं। सुगाल ग्रुप की पहली और मुख्य प्राथमिकता प्रत्येक व्यापार में अपने ग्राहकों और सेवा से लाभान्वितों को विशिष्ट व गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदान करना है। वर्तमान में सुगाल ग्रुप रियल एस्टेट, वेयरहाउसिंग, लॉटरी, गेमिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, शेयर, कमोडिटी ब्रोकिंग और शिक्षा सहित विविध क्षेत्रों का चमकता हुआ सितारा है। अपने व्यापारिक कौशल का लोहा मनवा चुका सुगाल ग्रुप इन व्यापारिक क्षेत्रों में अमिट विश्वास की प्रतिमूर्ति और मिल का पत्थर साबित हो रहा है।

सुगाल ग्रुप की कम्पनियां	
सियाट होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड	होल्डिंग कंपनी
सुमित ऑनलाइन ट्रैड सॉल्यूषन प्राइवेट लिमिटेड	ऑनलाइन लॉटरी
स्किल लोट्टो सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड	लॉटरी वितरक
स्किल रॉक टेक्नोलॉजिज प्राइवेट लिमिटेड	सॉफ्टवेयर
सुगाल एंड दामानी फाउंडेशन्स प्राइवेट लिमिटेड	परियोजना प्रबंधन
एस एंड डी शेयर ब्रोकर्स लिमिटेड	स्टॉक ब्रोकिंग
ध्रुव कम्युनिकेशन एलएलपी	मोबाइल वितरण और रिटेल स्टोर
अंकुर फाउंडेशन	रियल एस्टेट

परोपकार के भाव से ओतप्रोत परिवार

20वीं सदी के प्रारंभिक दिनों में ही व्यापार की तलाश में दक्षिण की राह पर निकल पड़े सिंघवी परिवार व श्री एन.सुगालचंद जैन को जीवदया और परमार्थ की सेवा का भाव विरासत में मिला है। 60 के दशक के पश्चात सिंघवी परिवार ने परोपकार के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेना प्रारम्भ किया। सिंघवी परिवार द्वारा समाज के वंचित और मूलभूत सुविधाओं से वंचित कमजोर लोगों के उत्थान के लिए कई धमार्थ ट्रस्टों की स्थापना की और गैर सरकारी संगठनों को भी आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

सिंघवी परिवार का अपने संस्कारों और अपनी जन्मभूमि से लगाव रहा है। पूर्वजों की राह को अंगीकार करते हुए इस परिवार ने कभी भी स्वयं को मूल प्रदेश राजस्थान से दूर नहीं होने दिया। श्री एन. सुगालचंद जैन ने अपनी कर्मभूमि तमिलनाडु के साथ राजस्थान के अपने पैतृक जिले पाली को भी लाभान्वित करने का प्रयास किया। कमजोर और समाज के जरूरतमंद लोगों को चिकित्सा और शिक्षा सुविधा मुहैया कराने के लिए अपनी कमाई का एक निश्चित भाग देना प्रारम्भ किया, सेवा का यह भाव आज भी अनवरत रूप से जारी है।

उन्होंने सियाट गांव में शिक्षा की अलख को आगे बढ़ाने के लिए अपने माता श्रीमती जड़ावबाई और पिता श्री नथमल सिंघवी के नाम से एक शानदार विद्यालय भवन का निर्माण करवाया, जहां आज की पीढ़ी विद्यार्जन कर रही है। इसके साथ ही इन्होने अनेक विद्यालय भी गोद लिए। अकाल और अतिवृष्टि सरीखी प्राकृतिक आपदाओं के विपरीत दौर में भी सिंधवी परिवार ने अपनी जिम्मेदारी निभाई। विगत कुछ वर्षों से सिंघवी परिवार विभिन्न ट्रस्टों के माध्यम से वित्तीय सहयोग कर सामुदायिक सेवा के पुण्य कर्म की जिम्मेदारी का भी निर्वहन कर रहा है।

परिवार ने इसके अलावा हैदराबाद में मेडिसिटी अस्पताल, भारतीय विद्या भवन और कैंसर संस्थान, अडयार, शंकर नेत्रालय, चाइल्ड ट्रस्ट अस्पताल, वॉल्यंटरी हेल्थ सर्विस चेन्नई आदि संस्थानों को भी पर्याप्त दान दिया है।

श्री एन. सुगालचंद जैन के सबसे बड़े पुत्र श्री प्रसनचंद जैन ने अपने बेहतर प्रबंधकीय कौशल एवं कुशल नेतृत्व क्षमता से परिवार की व्यापारिक विरासत को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्री प्रसनचंद स्किलरॉक टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड के प्रवर्तक-निदेशक हैं, जो कि सुगाल एंड दमानी समूह की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है। श्री प्रसनचंद दिल्ली से ही अपने व्यापार का प्रसार करते हुए समूह की विभिन्न कम्पनियों और डिविजनों के प्रबंधन और संचालन की कमान संभाल रहे हैं। कुशल नेतृत्व के धनी श्री प्रसनचंद ने लॉटरी, सूचना प्रौद्योगिकी, ई-कॉमर्स और भुगतान के साथ ही रियल एस्टेट के व्यापारिक क्षेत्र में एक अलग ही मुकाम हासिल किया है। अपने कार्य में निपुण और लक्ष्य के प्रति समर्पित श्री प्रसनचंद जैन ने समूह के कर्मचारियों और ग्राहकों के बीच मधुर सम्बन्धों की स्थापना कर एक अलग छवि बनाई है। वे अक्सर अपनी टीम को प्रोत्साहित करते रहते हैं और उन्हें तकनीकी रूप से दक्ष करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। श्री प्रसनचंद जैन ने विदेशी धरती पर भी सुगाल और दमानी समूह के व्यापार के प्रसार के लिए अवसरों की तलाश की और व्यापार स्थापित करने के प्रयासों का कुशल नेतृत्व किया। वर्तमान में श्री प्रसनचंद जैन दिल्ली में अपने परिवार के साथ रहते हुए इस व्यापारिक विरासत का जिम्मेदारी बखूबी संभाल रहे हैं।

श्री प्रसनचंद देश के कई धर्मार्थ और परोपकारी संगठनों में सुगाल और दमानी समूह और सुगल समूह का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। श्री प्रसनचंद जैन निम्न संगठनों में प्रमुख पदों पर है:-

जैन अंतरराष्ट्रीय व्यापार संगठन,	**जितो एपेक्स, निदेशक**
जितो प्रशासनिक प्रशिक्षण फाउंडेशन,	**संरक्षक सदस्य**
भगवान महावीर रिलीफ फाउंडेशन ट्रस्ट,	**प्रबंध सचिव**
भगवान महावीर फाउंडेशन,	**प्रबंध ट्रस्टी**
एम्पैथी फाउंडेशन,	**प्रवर्तक ट्रस्टी**
जैन्स इंडिया ट्रस्ट,	**ट्रस्टी**
विद्या ज्योति ट्रस्ट,	**ट्रस्टी**
सिंघवी चौरिटेबल ट्रस्ट,	**ट्रस्टी**
वीरायतन	

श्री एन.सुगालचंद के छोटे पुत्र श्री विनोद कुमार जैन अपने पिता के नक्शे कदम पर चलते हुए व्यापार के साथ ही सेवा व परमार्थ के दायित्वों का भी निर्वहन कर रहे हैं। विगत तीन दशक से वह चेन्नई में अपने पिता के व्यापारिक साम्राज्य को संभाल रहे हैं। विभिन्न ट्रस्टों से जुड़े श्री विनोद कुमार जैन ने जरूरतमंदों की सेवा और कमजोर तबके के लोगों के सामाजिक व आर्थिक उत्थान के लिए भी कई प्रभावी कदम उठाए।

पिता की तरह ही उनमें भी पढ़ने की ललक और ज्ञान अर्जित करने की ख्वाहिश उन्हें नया सीखने के लिए प्रेरित करती रहती है। विश्व में व्यापारिक प्रबंधन में होने वाली हलचल हो या फिर वित्त के मामले में कोई परिवर्तनकारी नवाचार, वे इसके अनुरूप व्यापार में बदलाव लाकर सिंघवी परिवार की इस विरासत को आगे बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। अपनी प्रबंधकीय कौशल में निखार लाने के लिए श्री विनोद कुमार ने हैदराबाद के इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस से व्यवसाय प्रबंधन के साथ ही कॉर्पोरेट गवर्नेंस पर भी विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

श्री विनोद कुमार देश के विभिन्न राज्यों में सामुदायिक और समाज सेवा, शिक्षा, स्वास्थ्य और चिकित्सा क्षेत्र में कार्यरत निम्न संगठनों से जुड़े हुए हैं।

पीपल फॉर एनिमल्स,	**ट्रस्टी**
रामकृष्णा विवेकानंद ट्रस्ट,	**ट्रस्टी**
जी. विमला फाउंडेशन ट्रस्ट,	**ट्रस्टी**
ब्ल्यू क्रॉस ऑफ इंडिया,	**कार्यकारी सदस्य**
वॉल्यंटरी हेल्थ सर्विसेज,	**ट्रस्टी**
राजस्थान एज्यूकेशनल फाउंडेशन,	**आजीवन ट्रस्टी**
गणाधिपति तुलसी जैन इंजीनियरिंग कॉलेज,	**वेल्लूर, कोषाध्यक्ष**
महर्षि विद्या मंदिर, वेल्लूर,	**सदस्य**

श्री एन. सुगालचंद जी जैन की भावी पीढ़ी के रूप में श्री प्रसनचंद जैन के पुत्र एवं श्री एन. सुगालचंद जैन के पौत्र श्री प्रमोद जैन वर्तमान में सिंघवी परिवार के व्यापारिक साम्राज्य की जिम्मेदारी का निर्वहन बखूबी कर रहे हैं। अपने दादाजी और पिताजी की तरह ही व्यवहार कुशल और व्यापार को अनवरत आगे ले जाने सोच से परिपूर्ण प्रमोद जैन आधुनिक सोच व तकनीक से व्यापार में कई नवाचार कर रहे हैं और अपने सभी व्यवसायों में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। परिवार से विरासत में मिले सेवा भाव और संस्कारों के चलते वे समाज को अपना योगदान देने में भी अग्रणी हैं।

श्री एन सुगालचंद जैन के पौत्र व श्री विनोद कुमार जैन के पुत्र श्री प्रतीक जैन अपने इर्द-गिर्द वंचितों और कमजोरों के चेहरों पर प्रसन्नता लाने की दिशा में प्रयासरत है। परिवार से विरासत में मिले नैतिक मूल्यों और संस्कारों का प्रभाव श्री आईदानमलजी की वर्तमान युवा पीढ़ी पर साफ परिलक्षित होता है। श्री प्रतीक जैन अपने परिवार की तरह ही समाज की हितकारी गतिविधियों में सक्रिय रूप भाग लेते हैं।

धर्मार्थ संस्थानों की स्थापना

समाज के कमजोर और जरूरतमंदों की सहायता के लिए श्री एन. सुगालचंद जैन ने निम्नलिखित धर्मार्थ संगठनों की स्थापना की है :-

सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट : स्थापना वर्ष 1974

सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट समाज के कमजोर और जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिए दृढ़ प्रतिबद्ध है। अपने इस धर्मार्थ मिशन के जरिए ट्रस्ट की इच्छा रही है कि समाज के वंचित वर्ग तक चिकित्सा सुविधा सुलभ हो। यह ट्रस्ट, विगत 30 वर्षों से शहरों से दूर ठेठ देहात के गावों में निःशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित कर कमजोर वर्ग के लोगों तक स्वास्थ्य, नेत्र और दंत चिकित्सकों की सुविधा पहुँचा रहा है।

1. ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा सहायता : ट्रस्ट प्रत्येक रविवार को ऐसे ही गांवों में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच, दंत चिकित्सा और नेत्र जांच शिविरों का आयोजन करता आ रहा है, जिसमें मरीजों को दवाईयां व चश्में ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क प्रदान किये जाते हैं एवं मरीजों के लिए भोजन की व्यवस्था की जाती है। ट्रस्ट के द्वारा जुलाई 2022 तक चेन्नई के विभिन्न गावों में 1003 ग्रामीण चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया जा चुका है।

राजस्थान में गावों तक पहुचाई निःशुल्क चिकित्सा : ट्रस्ट ने चेन्नई के पश्चात राजस्थान में भी ऐसे चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर आयोजित करना प्रारम्भ किये। सियाट, फुलाद, जोजावर, नाणा, जाडन, कंटालिया, सेवाड़ी, मगरतलाब, बगड़ी नगर, भिमाणा सहित कई गांवों तक चिकित्सा सुविधा पहुंचाई गई। ट्रस्ट अब तक पाली जिले के गांवों में करीब 50 निःशुल्क स्वास्थ्य जांच, नेत्र जांच और दंत चिकित्सा शिविरों का आयोजन कर चुका है।

2. प्रतिदिन निःशुल्क सेवा

ट्रस्ट की ओर से चेन्नई में सिंघवी स्कैन एंड डायग्नोस्टिक सेंटर में प्रतिदिन नेत्र जांच सुविधा मुहैया कराई जा रही है। ट्रस्ट की ओर से जुलाई 2022 तक 4,487 इन हाउस कैम्पस चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया जा चुका है।

3. हार्ट ऑपरेशन के लिए आर्थिक सहायता

सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट ने 2001 से ऐसे लोगों की आर्थिक मदद करने की मुहिम प्रारम्भ की जिन्हें हार्ट ऑपरेशन की सर्वाधिक जरूरत थी, लेकिन आर्थिक तंगहाली के चलते वे जीवन से संघर्ष कर रहे थे। ट्रस्ट ने ऐसे जरूरतमंद लोगों को हार्ट ऑपरेशन में सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से 10,000 रुपये की आर्थिक मदद करने की पहल प्रारम्भ की। ट्रस्ट द्वारा जुलाई 2022 तक ऐसे 1674 लोगों को हृदय शल्य चिकित्सा के लिए 1.33 करोड़ रूपए की राशि मदद स्वरूप प्रदान की है। इसके साथ ही सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट ने अब तक 49.28 लाख रूपए की दवाइयाँ अन्य बीमारी से पीड़ितों को निःशुल्क रूप से उपलब्ध करवाई है।

4. जरूरतमंद जैन व्यक्तियों को पेंशन : सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से जैन समाज के जरूरतमंद परिवारों को आर्थिक संबल देने के उद्देश्य से मासिक पेंशन प्रदान की जा रही है। यह पेंशन विशेषकर राजस्थान के पाली जिले और चेन्नई में निवासरत जैन समाज के व्यक्तियों को दी जा रही है। ट्रस्ट द्वारा जुलाई 2022 तक 2121 जरूरतमंद निराश्रितों को पेंशन के रूप में 3.25 करोड़ रूपए आर्थिक की मदद की है।

5. चेन्नई के ट्रिप्लिकेन में सिंघवी स्कैन एंड डायग्नोस्टिक सेंटर संचालित किया जा रहा है। ट्रस्ट का यह केंद्र कम कीमत पर गुणवत्तापूर्ण और विश्वसनीय लैब जांच की सेवाएँ प्रदान कर रहा है।

6. ट्रस्ट की ओर से विभिन्न सेवा संस्थानों में भवन निर्माण करवाए गए हैं तथा निर्माण के लिए आर्थिक सहयोग भी किया गया है।
- कैंसर इंस्टीट्यूट अड्यार में महावीर आश्रय का निर्माण
- कैंसर इंस्टीट्यूट अड्यार में भगवान आदिनाथ जैन कॉम्प्लेक्स का निर्माण
- कैंसर इंस्टीट्यूट अड्यार में भगवान महावीर विश्रांति ग्रह का निर्माण
- कैंसर इंस्टीट्यूट अड्यार में ऑन्कोलॉजी ब्लॉक का निर्माण
- चेन्नई के वॉल्यंटरी हेल्थ सर्विसेज में मरीजों के लिए ब्लॉक निर्माण
- शंकर नेत्रालय, चेन्नई में श्रीमती जड़ावबाई नथमल सिंघवी ग्लूकोमा सर्विस

महावीर आश्रय, श्रीपेरंबदूर, चेन्नई

सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से 2017 में श्रीपेरंबदूर में श्रीमती चंद्राबाई सिंघवी कैंपस में महावीर आश्रय का निर्माण कराया गया जिसका उद्देश्य कैंसर रोगियों की कष्ट व तकलीफों को कम करना तथा उन्हें अस्पताल में घर जैसा सुकूनभरा माहौल उपलब्ध करवाना था। अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित यह आश्रय स्थल 5 एकड़ भूमि में निर्मित है। चिकित्सा के क्षेत्र में सेवा के भाव से महावीर आश्रय को 22 जून 2017 को कैंसर संस्थान (डब्ल्यू. आई. ए.), अड्यार को सुपुर्द कर दिया गया, जिसका उद्घाटन देश के **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी** के द्वारा 12 अप्रेल 2018 को किया गया। 50 बेड का यह आश्रय स्थल कैंसर की असहनीय पीड़ा से कराह रहे मरीजों के जीवन में सुकून के कुछ पल लाने की दिशा में प्रभावकारी कदम है। इस आश्रय स्थल को तमाम ऐसे उपकरणों और फर्नीचर से सुसज्जित किया गया है, जो उनके जीवन को आनंदमयी होने की अनुभूति करा सके। यह कैंसर के गंभीर रोगियों को आवश्यकता के अनुरूप तत्काल सहायता प्रदान करने का महत्वपूर्ण जरिया है। ट्रस्ट का मानना है कि हर व्यक्ति को अपना जीवन गरिमामय और खुशनुमा तरीके से व्यतीत करने का अधिकार है। सेवा का यह भाव आज कई कैंसर रोगियों की पीड़ा को कम कर उनके अपनों के चेहरों पर खुशियां लौटा रहा है।

जिनेंद्र जीवदया केंद्र, उथुकोट्टई, चेन्नई

श्री सुगलचंद जैन ने मूक जीवों को प्रकृति की गोद में जीवन जीने देने के उद्देश्य से 1995 में पीपल फॉर एनिमल्स, चेन्नई की स्थापना की। श्री जैन के इस प्रयास से विगत कई सालों से इस केन्द्र में परित्यक्त और बेसहारा मूक प्राणियों को आश्रय मिल पा रहा है, जिनको उनके मालिक छोड़ चुके थे या फिर वे सड़कों पर भटकते फिर रहे थे। हालांकि, पहले तो गायों व अन्य जानवरों के लिए 3.5 एकड़ भूमि में ही पशु कल्याण आश्रय केन्द्र का संचालन किया जा रहा था। लेकिन, जैसे-जैसे इस संगठन के जरिए जीवदया के कार्यक्रम बढ़ने लगे, वैसे-वैसे यहां मूक पशुओं की संख्या में भी इजाफा होने लगा। यह देख श्री सुगालचंद जैन ने चेन्नई के पास उथुकोट्टई में 18.4 एकड़ जमीन खरीदकर मूक जीवों के सेवार्थ सुपुर्द कर दी। कुदरती सौंदर्य से परिपूर्ण हरियाली से आच्छादित इस भूमि पर एक भव्य और सुविधाजनक जिनेन्द्र जीवदया केन्द्र का निर्माण करवाया गया है। यहां पर करीब एक हजार से अधिक मूक जीव जैसे गाय, भैंस,घोड़े, सूअर, बंदर, बिल्ली, श्वान, भेड़-बकरियों और खच्चर जैसे बेजुबान जीवों को आश्रय मिल पाया है, जो प्रकृति की गोद में जीवन यापन कर रहे हैं। यहां पर इनके लिए पर्याप्त चारे-पानी और फल-सब्जियों की समुचित व्यवस्था है।

महावीर राजस्थानी इंटरनेशनल स्कूल, गुडापक्कम, चेन्नई

महावीर राजस्थानी इंटरनेशनल स्कूल के निर्माण के लिए श्री एन. सुगालचंद जी के परिवार ने चेन्नई के गुडापक्कम में राजस्थान शैक्षिक संगठन को 10.5 एकड़ का भूदान किया। संगठन के निर्देशन में संचालित इस विद्यालय ने अनुशासित, संस्कारित और उत्कृष्ट शैक्षिक माहौल के कारण इस क्षेत्र में एक अलग पहचान कायम की है। विद्यालय के शिक्षक यहां पर अध्ययनरत विद्यार्थियों को उत्कृष्ट शिक्षा का माहौल प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में यहां पर लगभग 280 विद्यार्थी शिक्षार्जन कर रहे हैं।

विद्या ज्योति ट्रस्ट : स्थापना वर्ष 2000

श्री एन. सुगालचंद जैन ने सन 2000 में विद्या ज्योति ट्रस्ट की आधारशिला रखी। जिसका उद्देश्य युवा पीढ़ी को कम लागत में उच्च शिक्षा व तकनीकी में पारंगत करना रहा है। इसी उद्देश्य से ट्रस्ट के द्वारा विभिन्न नवीन शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की गई। यह उच्च व तकनीकी शिक्षण संस्थान विद्यार्थियों की प्रतिभा और शैक्षणिक अंकों के आधार पर शिक्षण शुल्क में छूट प्रदान कर युवाओं को उच्च शिक्षा प्रदान करने में राहत प्रदान कर रहे हैं। विद्या ज्योति ट्रस्ट के जरिए जो भी शिक्षण संस्थान स्थापित और संचालित है, उनमें किसी से भी कोई सहयोग या दान नहीं लिया गया।

1. एस.जे.एन.एस जैन ग्रुप ऑफ स्कूल्स, चेन्नई तमिलनाडु
2. महावीर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस (MITS), पाली, राजस्थान
3. एम.आई.टी.एस साइंस आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, जाड़न

1. विद्या ज्योति ट्रस्ट के द्वारा चेन्नई में दो प्राथमिक विद्यालयों और एक उच्च माध्यमिक विद्यालय का संचालन किया जा रहा है। एल.के.जी से 12वीं कक्षा तक के यह विद्यालय बुनियादे ढांचे के साथ-साथ पर्याप्त सुविधाओं से सुसज्जित है। अंग्रेजी माध्यम में संचालित इन विद्यालयों का परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत रहता है। यहाँ नियुक्त योग्यताधारी शिक्षक भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा देने के लिए समर्पित है। यहां वर्तमान में 1200 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं।

2. उच्च शिक्षा प्रदान करने की दिशा में राजस्थान के पाली जिले में रनिया बेरा में स्थित एमआईटीएस समूह, विद्या ज्योति ट्रस्ट का एक बेहतरीन और प्रभावकारी कदम है। एमआईटीएस समूह के इंजीनियरिंग और डिग्री कॉलेज में वर्तमान में प्रदेश के विभिन्न गांव-शहरों के 560 विद्यार्थी अध्ययनरत है। महावीर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड साइंस, महाविद्यालय तकनीकी विश्वविद्यालय, बीकानेर से सम्बद्धता प्राप्त है। यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को कम्प्यूटर सांइस, सिविल और मैकेनिकल में बीटेक की शिक्षा प्रदान की जा रही है। समूह के लिए यह गौरवशाली अनुभव रहा कि सत्र 2017-18 में विद्यार्थियों के पहले बैच ने ही राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा से सम्बधता प्राप्त राज्य के सभी महाविद्यालयों में सर्वाधिक 93.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर समूह को गौरव की अनुभूति करवाई।

ग्रुप के इस विशाल परिसर में आधुनिक सुविधाओं से युक्त भवनों का निर्माण किया गया है, जहाँ तकनीकि व डिग्री कॉलेज पृथक-पृथक भवनों में संचालित की जा रही है। इस परिसर में छात्रों व छात्राओं के लिए पृथक-पृथक आवासीय सुविधा है, जहां अध्ययनरत व निवासरत विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण भोजन भी मिल रहा है। पर्यावरण सुगम यह परिसर विद्यार्थियों को शिक्षा का उत्कृष्ट माहौल देने की दिशा में अनवरत प्रयासरत है।

3. सत्र 2018-19 से यहां जयनारायण विश्वविद्यालय जोधपुर से सम्बद्धता प्राप्त एमआईटीएस साइंस आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, जाड़न (MITS डिग्री कॉलेज) प्रारम्भ किया गया। यह जोधपुर संभाग का पहला अंग्रेजी माध्यम का स्नातक महाविद्यालय है, जहां पर बी.एस.सी (पी.सी.एम), बी.एस.सी (सी.बी.जेड), बी.कॉम, बी.ए के साथ-साथ बी.बी.ए और बी.सी.ए की नियमित कक्षाएं संचालित की जाती है। प्रतिवर्ष सांस्कृतिक आयोजन, खेलकूद, शैक्षणिक भ्रमण, सरीखी सह शैक्षणिक गतिविधियों का भी आयोजन करवाया जाता है।

ट्रस्ट की अन्य गतिविधियां

1. प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति : राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों व गरीब परिवार के बच्चे भी इंजीनियरिंग व उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने परिवार को संबल प्रदान कर सके, इस उद्देश्य से ट्रस्ट की ओर से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है।

2. श्रीमती चंद्रबाई कंप्यूटर साक्षरता कार्यक्रम : विद्या ज्योति ट्रस्ट के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को तकनीकी रूप से दक्ष करने के उद्देश्य से दिसंबर 2016 में राजस्थान के पाली जिले में कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम प्रारम्भ कर एक अभिनव पहल की। पाली जिले के धाकड़ी, बागावास, इंद्रा नगर, दूदौड़, खारिया सोढ़ा, खराड़ी, मालपुरिया सरीखे 28 गांवों के राजकीय विद्यालयों में ये नवाचार किया गया। इसके तहत ट्रस्ट की ओर से कम्प्यूटर प्रशिक्षितों की एक टीम राजकीय विद्यालयों में पहुंचकर लैपटॉप पर पांचवीं से आठवीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों को कम्प्यूटर का प्रारंभिक प्रदान कर रहे हैं। इस नवाचार से अब तक जिले के 1825 छात्र प्रत्येक्ष रूप से लाभान्वित हुए हैं।

3. इसके साथ ही ट्रस्ट ने राजकीय विद्यालयों को गोद लेकर उनका आधारभूत विकास करने और उन्हें संवारने में भी अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। इसके तहत पाली जिले के सोजत, धूंधला, सियाट, जाडन और बागावास के राजकीय विद्यालयों को ट्रस्ट ने गोद लिया है। गोद लिए हुए इन विद्यालयों में ट्रस्ट ने रंग-रोगन करवाकर आवश्यक निर्माण कार्य भी करवाया है। इसके अलावा विद्यालय में आवश्यकतानुसार पानी की मोटर, कुर्सियां, छत के पंखे, आलमारी, बच्चों के लिए दरी पट्टी आदि प्रदान कर बच्चों के शिक्षा के स्थल को सुगम बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इस पहल से अब तक इन विद्यालयों में 2600 से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हुए हैं।

4. स्वच्छ भारत मिशन : स्वच्छ भारत अभियान से प्रेरित होकर ट्रस्ट ने स्वच्छता में सुधार लाने के उद्देश्य से ट्रस्ट ने राजस्थान के पाली जिले के चार राजकीय विद्यालयों में शौचालयों का निर्माण करवाकर विद्यालय प्रशासन को सुपुर्द किए।

5. चौपाल कार्यक्रम : मुख्यमंत्री चौपाल योजना के तहत सामुदायिक लाभ प्रदान करने के उद्देश्य से ट्रस्ट के द्वारा 55 चौपालें आयोजित की गई, जिनमें मुख्यतः पाली जिले के जाडन, सियाट, धूंधला, बागावास और सोजतरोड गांव-कस्बे शामिल है।

जैन्स इंडिया ट्रस्ट : स्थापना वर्ष 2002

जैन समाज के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देकर प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से वर्ष 2002 में जैन्स इंडिया ट्रस्ट की स्थापना की गई। जुलाई 2022 तक जैन्स इंडिया ट्रस्ट द्वारा 10,712 विद्यार्थियों को 12.69 करोड़ रूपए से अधिक की छात्रवृत्ति देकर लाभान्वित किया जा चूका है। इसके अलावा यह ट्रस्ट मद्रास यूनिवर्सिटी से जैनोलॉजी में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों और शोधार्थियों को अनुदान देने की पहल भी कर रहा है।

एम्पथी फाउंडेशन

जन कल्याण के उद्देश्य से सन् 2005 में एम्पथी फाउंडेशन की नींव रखी गई। यह फाउंडेशन महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों और ग्रेटर मुम्बई की कच्ची बस्तियों में निवास करने वाले वंचितों और गरीबों की सहायता कर उन्हें राहत पहुचाने के लिए अनवरत प्रयत्नशील है। सुगाल एंड दामानी ग्रुप के कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसबिलिटी के तहत इस ट्रस्ट के माध्यम से समाज के कमजोर तबके तक प्रमुख रूप से शिक्षा और चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध करवाई जा रही है। अब तक यह फाउंडेशन महाराष्ट्र के 17 जिलों में 240 विद्यालय भवनों का निर्माण करवा चुका है, जहां हजारों जरूरतमंद परिवारों के बच्चे शिक्षा के अधिकार से वंचित थे। महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों में आबाद रायगढ़, रत्नागिरी, थाने बीड नवी मुम्बई, सांगली, कोल्हापुर, पूने, सतारा, सिंधुदुर्ग और सोलापुरा आदि स्थानों पर विद्यालय भवनों का निर्माण करवाया गया है, जिससे इन ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की राह प्रशस्त हो पाई। इसके साथ ही फाउंडेशन के द्वारा गांवों में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच, दंत चिकित्सा और नेत्र जांच शिविर आयोजित करवाकर मरीजों को चश्में और दवाइयां निःशुल्क प्रदान की जा रही है। इसके साथ ही फाउंडेशन और रायगढ़ जिला परिषद के संयुक्त तत्वावधान में ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यक्रमों के जरिए व मानव विकास कार्यक्रम के तहत समाज के वंचितों को लाभान्वित किया जा रहा है।

एम्पथी फाउंडेशन की अन्य गतिविधियां

- महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों में वर्षा के पानी के सदुपयोग के लिए रैन हार्वेस्टिंग
- महाराष्ट्र के ठेठ देहात के गांवों में निवासित ग्रामीणों के घरों व गलियों में सोलर लाइट से रोशनी का प्रबंध।
- पानी से सूखते कुओं व सूखते बोरवेल को गहरा करवाकर तथा नहरों का विकास करवाकर वंचितों तक पेयजल पहुंचाने का प्रयास।
- मूलभूत सुविधाओं के विस्तार के साथ-साथ सर्वांगीण विकास की सोच से गांवों को गोद लेने की पहल।

मातोश्री जीजाबाई हाई स्कूल

जवाहर नवोदय विद्यालय, कागल जिला, कोल्हापुर

गणाधिपति तुलसी जैन इंजीनियरिंग कॉलेज

तमिलनाडु के ठेठ देहात व ग्रामीण इलाकों के वे विद्यार्थी, जो इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उच्च अध्ययन कर अपनी मंजिल पाना चाहते हैं, ऐसे विद्यार्थियों के सपनों को पूरा करने के लिए ही तमिलनाडु के वेल्लूर जिले के कानियम्बड़ी में गणाधिपति तुलसी जैन इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना की गई है। वर्ष 2000 से संचालित ये कॉलेज इंजीनियरिंग के मानकों पर खरा उतरता है। यहां तकनीकि दक्षता के अनुरूप ही भवन का निर्माण कर प्रयोगशालाएं स्थापित की गई है। इसके साथ ही प्रशिक्षित फैकल्टी की व्यवस्था है।

ये कॉलेज विद्यार्थियों को स्नातक स्तर पर सिविल, कम्प्यूटर साइंस, इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर साइंस, इलेक्ट्रोनिक इंजीनियरिंग, मैकेनिकल और इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी में बी.टेक की सुविधा देता है। वहीं स्नातकोर पाठ्यक्रम में एम.बी.ए और एम.सी.ए की सुविधा दे रहा है। इसके अलावा कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स एंड टेली कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग तथा मैकेनिकल के यू.जी स्तरीय पाठ्यक्रम की सुविधा उपलब्ध है, जो कि स्थायी रूप से अन्ना विश्व विद्यालय चेन्नई से सम्बद्धता प्राप्त है।

ये कॉलेज लगातार श्रेष्ठ परिणाम देकर अन्ना विश्वविद्यालय में अपनी रैंक को बरकरार किए हुए हैं। रोजगार के अवसर मुहैया कराने में भी इस कॉलेज का प्रदर्शन श्रेष्ठ है। पिछले सालों से लगातार इस कॉलेज के विद्यार्थियों को देश विदेश की शीर्ष बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने उच्च पदों के लिए चयन किया है।

महर्षि विद्या मंदिर, वेल्लूर

गणाधिपति तुलसी जैन इंजीनियरिंग कॉलेज की इकाई के रूप में सन् 2019 में महर्षि विद्या मंदिर का संचालन किया गया। यह विद्यालय परिसर लगभग 6.56 एकड़ भूमि में संचालित है जहाँ 27,000 वर्गफिट क्षेत्र में विद्यालय भवन का निर्माण किया गया है, जिसमें वर्तमान में 251 छात्र-छात्राएं शिक्षार्जन कर रहे हैं।

समाज सेवा के क्षेत्र में सुगाल ग्रुप

समाज का विकास करने के उद्देश्य से सुगाल ग्रुप के द्वारा धर्मार्थ संस्थानों की स्थापना की गई है। यह संस्थान शिक्षा, चिकित्सा, जीव दया सहित विभिन्न क्षेत्रों में व्यावसायिक, सामाजिक दायित्वों (कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोन्सबिलिटी) का निर्वहन कर रहे हैं।

धमार्थ संस्थान	सी. एस. आर. गतिविधियों के लिए परोपकारी कर्म व संस्थाएं
सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट **1974 में स्थापना**	◆ सिंघवी स्कैन एंड डायग्नोस्टिक सेंटर ◆ ग्रामीण एवं अंतरभवनीय नेत्र व दंत चिकित्सा ◆ मूक परिंदों कबूतरों के लिए चुग्गा ◆ हार्ट ऑपरेषन, अन्य उपचार व दवाइयों के लिए सहायता ◆ गैर सरकारी संगठनों को दान व सहयोग ◆ जैन समाज के जरूरतमंदों को मासिक छात्रवृत्ति ◆ राजस्थान में स्वच्छ भारत अभियान की गतिविधियां
भगवान महावीर फाउंडेशन **1994 में स्थापना**	मानवता के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रयासों के लिए चार अलग अलग कार्यक्षेत्र में महावीर पुरस्कार विद्यालय व महाविद्यालय स्तरीय निबन्ध प्रतियोगिता के लिए महावीर पुरस्कार
विद्या ज्योति ट्रस्ट **2000 में स्थापना**	**श्रीमती जड़ावबाई नथमल सिंघवी जैन शिक्षण संघ** ◆ एस.जे.एन.एस जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय, ट्रिप्लिकेन, चेन्नई ◆ एस.जे.एन.एस जैन नर्सरी एवं प्राथमिक विद्यालय, बिग स्ट्रीट, ट्रिप्लिकेन, चेन्नई ◆ एस.जे.एन.एस जैन नर्सरी एवं प्राथमिक विद्यालय, पोनप्पा लेन, ट्रिप्लिके, चेन्नई **एम.आई.टी.एस** महावीर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस, जाडन, राजस्थान एमआईटीएस विज्ञान, कला और वाणिज्य महाविद्यालय, जाडन, राजस्थान ◆ योग्य विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति ◆ श्रीमती चन्द्रा बाई कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम, पाली ◆ राजस्थान में सरकारी शिक्षण संस्थाओं को गोद लेकर उनमें बुनियादों सुविधाओं का विकास एवं विस्तार
जैन्स इंडिया ट्रस्ट **2002 में स्थापना**	जैन समाज के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति जैनोलॉजी में उच्च शिक्षा व शोधार्थी विद्यार्थियों को शिक्षा अनुदान
एम्पथी फाउंडेशन **2005 में स्थापना**	एम्पथी फाउंडेशन महाराष्ट्र में 240 सरकारी विद्यालयों का निर्माण करवाकर सरकार को सुपुर्द
सायर बाई शिक्षा एवं चेरिटेबल ट्रस्ट	गणाधिपति तुलसी जैन इंजीनियरिंग कॉलेज, वेल्लूर महर्षि विद्या मंदिर, वेल्लूर
पीपल फोर एनिमल, चेन्नई	जिनेन्द्र जीवदया केन्द्र, उथुकोट्टई
राजस्थानी शैक्षणिक संगठन **2008 में स्थापना**	महावीर इंटरनेषनल स्कूल

प्रेरणास्रोत

प्रेम, करूणा और कृपा की त्रिवेणी

श्रीमति एस. चन्द्रा बाई
(1946 - 2016)
श्री एन. सुगालचंद जी जैन की धर्मपत्नी

गौरवशाली भारतीय संस्कृति के आदर्शों और भगवान महावीर स्वामी की जीवनोपयोगी शिक्षाओं से प्रेरित सियाट का सिंघवी जैन परिवार आज भी परमार्थ के भावों को अंगीकार किए हुए हैं। श्री एन. सुगालचंद जैन के ही पद चिन्हों पर चलते हुए उनके पुत्रों व पौत्रों के साथ परिवार की महिला शक्ति भी इन्हीं सेवा व परमार्थ के भावों को अपनाए हुए हैं और समाज के प्रति कृतज्ञता की इस परम्परा को आगे से आगे बढ़ाते जा रहे हैं।

समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने पर **श्री एन.सुगालचंद जैन** को जोधपुर के मेहरानगढ़ में दिनांक 12 मई 2022 को आयोजित **मारवाड़ रत्न पुरस्कार** समारोह में सम्मानित किया गया। गरिमामयी समारोह में सामाजिक सेवाओं के लिए जोधपुर राजघराने के **महामहिम श्री गजसिंह जी** के हाथों **राव जोधाजी सम्मान** से अलंकृत होते श्री सुगालचंद जैन।

Designed & Printed by : **SHRUTH - 915 000 8409**